चकमक

अक्टूबर, 1997 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 7.00

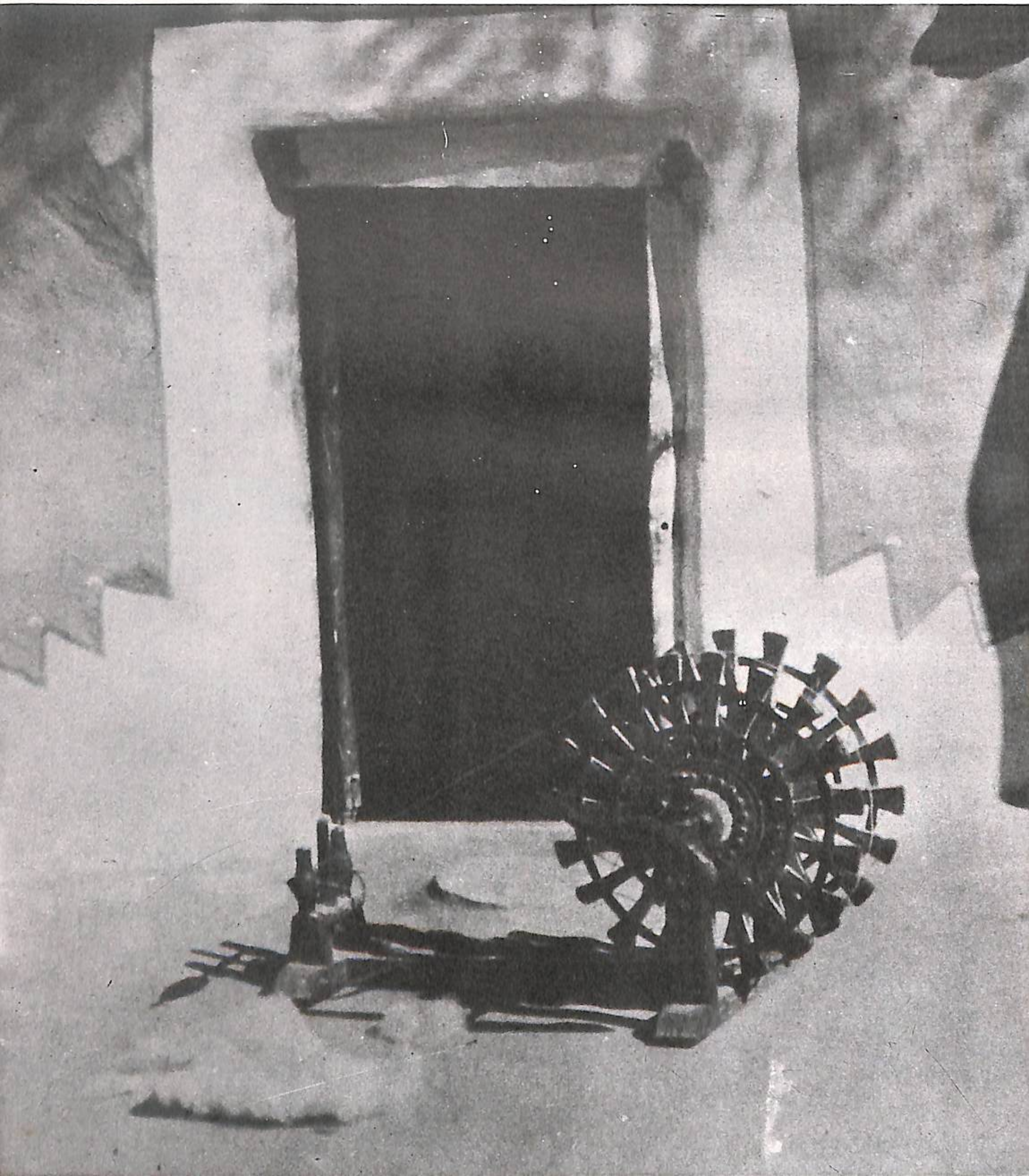

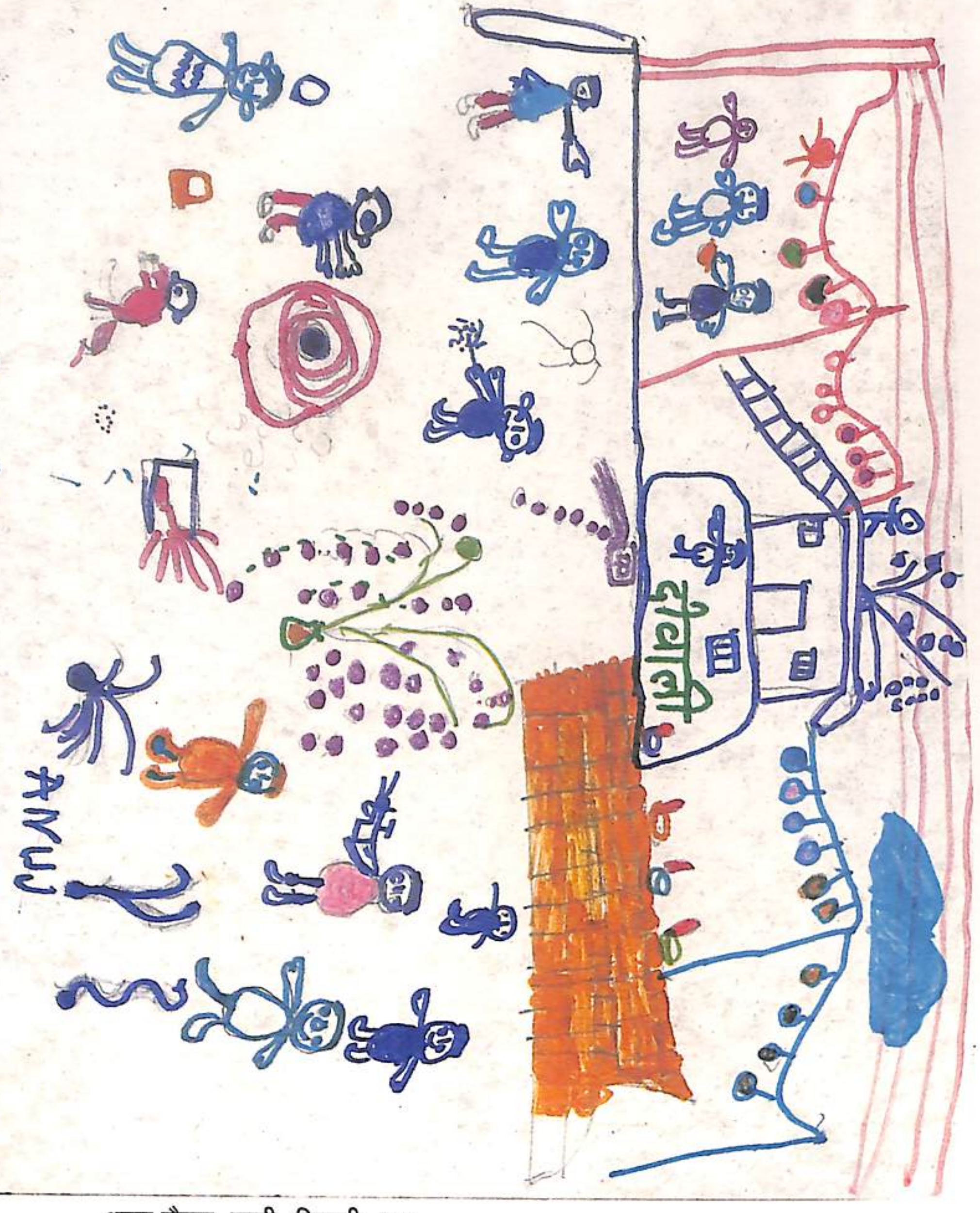

अनुज चौहान, पहली, टिमरनी, म.प्र.

जागेश्वर नेमा, ग्यारह वर्ष, सीहोर, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-13 अंक-4 अक्टूबर, 1997

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह, मनोज निगम, अशोक रोकड़े

चकमक का चंदा

एक प्रति	सात रुपए
छमाही	40.00 रुपए
वार्षिक	75.00 रुपए
दो साल	140.00 रुपए
तीन साल	200.00 रुपए
आजीवन	750.00 रुपए

साथ में आपके किसी मित्र या परिचित को एक साल की मुफ़्त सदस्यता।

आजीवन : 1000.00 रुपए साथ में एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक-एक प्रति पर 50% छूट।

सभी में डाक खर्च हमारा

चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ़्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

कागज़ : यूनिसेफ़ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई -1/25,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016
(म.प्र.)
फोन : 563380

शिवनारायण चौहान, आठवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

146 वें अंक में ....

विशेष

6 ❑ चरखा एक : अर्थ अनेक

कविताएँ

20 ❑ पूँछ वाले दानों की सभा

36 ❑ बुलबुल जी

कहानी

15 ❑ दादा जी को तोहफ़ा

धारावाहिक

37 ❑ क़िस्सा बुरातीनो का : 17

हर बार की तरह

2 ❑ इस बार की बात

25 ❑ वर्ग पहेली : 76

30 ❑ खेल काग़ज़ का : लूपर हवाई जहाज़

34 ❑ माथा पच्ची

मेरा पन्ना पृष्ठ 5, 12, 13, 14, 32, तथा 33 पर

और यह भी

3 ❑ पाठक लिखते हैं

11 ❑ तुम भी बनाओ

23 ❑ हमारी सेहत

26 ❑ पेड़, जानवर, पक्षी और इन्सान

29 ❑ चर्चा किताबों की

आवरण : राजस्थान के एक गाँव में घर के आँगन में रखा चरखा। फोटो : विलेज इण्डिया (स्टीफन पी. ह्यूलर) से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

पिछले दिनों एक रोचक ख़बर पढ़ने को मिली तो तुम्हें बताना ज़रूरी समझा। ख़बर यह है कि चॉकलेट और बिस्किट जैसी चीज़ें बनाने वाली एक बड़ी कम्पनी ने कुछ नए सलाहकारों को नियुक्त करना तय किया। इसके लिए कम्पनी ने सभी प्रमुख भारतीय अख़बारों में विज्ञापन दिए। विज्ञापन के जबाव में काफ़ी बड़ी संख्या में आवेदन आए। इन आवेदनों में से बारह लोगों को एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के बाद सलाहकार के रूप में चुना जाएगा।

तुम सोच रहे होगे कि इसमें नया क्या है? कम्पनियाँ तो ऐसा करती ही हैं। यह सब हम तुम्हें क्यों बता रहे हैं? वह इसलिए कि इसका सबसे मज़ेदार पहलू यह है कि ये सलाहकार कोई अनुभवी बड़े–बुज़ुर्ग नहीं होंगे। इन सलाहकारों की उम्र जानकर तुम शायद हमारी ही तरह भौंचक्क रह जाओ। ये तुम्हारे जैसे ही दस से सोलह साल तक के बच्चे होंगे। अब बच्चों को अपनी क्षमता और कौशल पर गुमान न हो तो क्या? ऊपर से यह कम्पनी हरेक सलाहकार को हर महीने दो हज़ार रुपए तनख्वाह भी देगी। लेकिन इन्हें रोज़ काम पर नहीं जाना होगा बल्कि सिर्फ़ छुट्टी वाले दिन ही ऑफ़िस और फैक्टरी जाना होगा। अब तो शायद तुम भी सोचने लगे होगे कि काश! एक बार हमें भी यह मौका मिल जाए।

पर इस मौके की सोच के आगे भी सोचने को बहुत कुछ है। पहले तो यही बताओ कि तुम्हें इस ख़बर के बारे में जानकर कैसा लगा? क्या तुम्हें भी लगता है कि तुम भी ऐसा कुछ कर सकते हो?

यह तो सभी मानते हैं कि तुम बच्चों में कई सारी प्रतिभाएँ छिपी रहती हैं। पर क्या आमतौर पर तुम्हारे आसपास के बड़े लोग उनको इतनी तवज्जो देते हैं? क्या तुम्हें नहीं लगता कि बच्चों से सम्बंधित कई मामलों में बड़ों को बच्चों की पसंद–नापसंद की ओर ध्यान देना चाहिए, उनकी राय लेना चाहिए। इसके लिए यह भी ज़रूरी है कि बड़े–बुज़ुर्ग तुम्हारे गुणों और क्षमताओं को समझने की कोशिश करें।

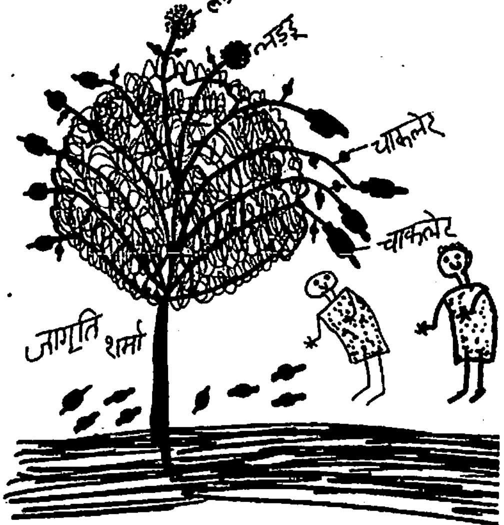

जागृति शर्मा, पहली, नेतनागर, रायगढ़, म. प्र.

पर एक और बात है जो इससे जुड़ी है और थोड़ा परेशान करती है। वह है हर चीज़ के, यहाँ तक कि बच्चों के भी व्यावसायिक उपयोग की। आजकल हर कोई पहले अपने फ़ायदे की बात सोचता है। सो, ज़ाहिर है, इस कम्पनी ने भी अपने फ़ायदे के लिए ही यह कार्यक्रम चलाया होगा। कुछ बच्चों को मुफ्त में टॉफी–बिस्किट खिलाना और साथ में तनख्वाह देना ही उसका उद्देश्य नहीं हो सकता। तो अब यह हमारे और तुम्हारे लिए सोचने की बात है कि इस कार्यक्रम से बच्चों को फ़ायदा कितना होगा और नुकसान कितना?

पाठक लिखते हैं

मैं आपकी पत्रिका 'चकमक' का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका की कहानियाँ, कविताएँ व विज्ञान लेख प्रशंसनीय हैं। मैं ग्यारहवीं का छात्र हूँ। इस कारण जुलाई, 97 में छपा लेख 'क्लोनिंग' बहुत उपयोगी लगा। परन्तु इस अच्छी पत्रिका में एक बात खटकती है। चकमक के प्रथम पृष्ठ में सबसे नीचे लिखा है, 'चकमक एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है।' कृपया ध्यान दें कि सही शब्द 'अव्यावसायिक' है। आशा है आगामी अंकों में आप भूल-सुधार कर लेंगे।

■ आभास मुखर्जी, पटपड़गंज, दिल्ली

(गलती की ओर ध्यान दिलाने के लिए धन्यवाद। ■चकमक)

जब से मैं चकमक पढ़ रहा हूँ तब से मैं देख रहा हूँ कि चकमक में टेढ़े-मेढ़े चित्र अधिक और सुन्दर-सुन्दर चित्र कम छपते हैं।

मैंने चकमक में सुन्दर-सुन्दर चित्र भेजे लेकिन वे नहीं छपे क्योंकि उसे मैंने नकल करके भेजा था। उसके बाद मैंने चकमक में 'नकल से बचो मन का रचो' पढ़ा तो मैंने मन से रचे हुए चित्र भेजे। लेकिन फिर भी वह नहीं छपे। इसलिए मैंने जान-बूझकर अपने मन से टेढ़े-मेढ़े चित्र भेजे, जो कि चकमक में छप गए।

मेरे मन से रचे हुए सुन्दर चित्र चकमक में नहीं छपते जबकि टेढ़े-मेढ़े चित्र छपते हैं। ऐसा क्यों?

■ आशीष कुमार साहू, देवरबीजा, दुर्ग, म.प्र.

चकमक अगस्त, 1997 के अंक में तितलियों के बारे में पढ़ा। इसमें मोनार्क तितलियों का चित्र छपा है। इसके बारे में मेरे पापा ने मुझे दो किताबों में इसके चित्र दिखाए और इसकी मज़ेदार कहानी भी बताई। वह कहानी मैं अपने चकमक के सभी दोस्तों को भी सुनाना चाहता हूँ।

मोनार्क तितलियाँ सितम्बर के महीने में पूर्वी कनाडा से दक्षिणी कनाडा तक का दो हज़ार मील से भी अधिक सफ़र करती हैं। ये तितलियाँ ज़मीन से लगभग 1 फीट ऊँचाई पर 11 मील प्रति घंटे की गति से उड़ती हैं। बहुत बड़ी तादाद में लोग इन्हें देखने आते हैं।

वापसी सफ़र में तितलियाँ अण्डे देती हैं और अधिकतर मर भी जाती हैं। लेकिन बीच सफ़र में पैदा हुए बच्चे अपने सही ठिकाने पर पहुँच जाते हैं। और फिर मौसम आने पर उसी तरह उड़कर पाईन के पेड़ों पर छा जाते हैं

■ अपूर्व सिसोदिया, सातवीं; बिलासपुर, म.प्र.

यहाँ से काट दें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर

माह .... से चकमक

भेजना शुरू करें–

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

जिला ....

पिन ☐☐☐☐☐☐

सदस्यता शुल्क रु. ....

.... माह/वर्ष

के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

छह माह : 40.00 रुपए
एक साल : 75.00 रुपए
दो साल : 140.00 रुपए
तीन साल : 200.00 रुपए
आजीवन : 750.00 रुपए *
आजीवन : 1000.00 रुपए ◦

* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

◦ इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से **'एकलव्य'** के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

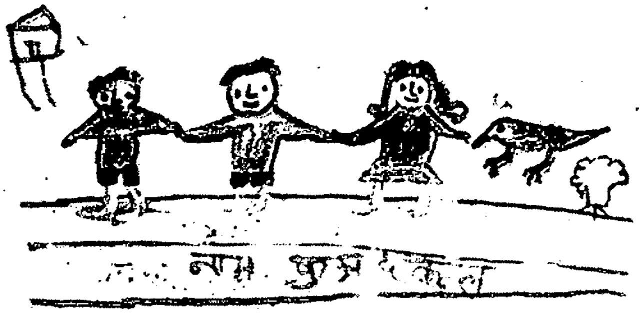

कुमुदकांत, किरगी, म.प्र.

यहाँ से काटें

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन | | | | | |

....

....

जून, 97 का चकमक का अंक मिला। रंगीन चुम्बक का आवरण पृष्ठ बेहद पसन्द आया। शीशे की आलमारी भी अच्छी लगी।

■ विनोद कुमार, नांदेड़, उज्जैन, म.प्र.

मुझे आपकी पत्रिका के कुछ अंक डॉ.रतनलाल शर्मा के सौजन्य से देखने को मिले। मैंने पाया कि आपकी पत्रिका अन्य बाल पत्रिकाओं से बहुत बेहतर है। आर्थिक अभाव के इस दौर में हिन्दी बाल पत्रिका का नियमित प्रकाशन एक कठिन काम है, जिसे आप बखूबी कर रहे हैं। मेरी ओर से आपको बधाई।

मैं चाहता हूँ कि आपकी इस पत्रिका के प्रचार-प्रसार में मैं कुछ योगदान दूँ, ताकि यह पत्रिका अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचे। इसी उद्देश्य से मैंने दिल्ली के सर्वाधिक प्रतिष्ठित स्कूल – दिल्ली पब्लिक स्कूल की वार्षिक पत्रिका के अपने सम्पादकीय में विद्यार्थियों को अच्छी हिन्दी पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित किया है, जिसमें आपकी पत्रिका का नाम भी है। इसके अतिरिक्त दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंत विहार के हिन्दी विभाग के माध्यम से भी ऐसा ही प्रयास करवाया है।

मुझे विश्वास है कि ऐसे लघु प्रयासों से आपको यह लेखकीय संघर्ष जारी रखने में सहायता मिलेगी। यदि हिन्दी के अन्य शुभचिंतक बंधु भी अपने-अपने क्षेत्र/संस्था में इसी प्रकार के प्रयास करें तो दम तोड़ती हिन्दी बाल-पत्रिकाओं को नवजीवन प्राप्त होगा। ऐसी मुझे आशा है।

■ रवि शर्मा, दिल्ली

(आशा है रवि जी की तरह अन्य पाठक भी अपने क्षेत्रों में ऐसा प्रयास करेंगे। ■ चकमक)

मैं कुमारी रंजना मीणा चकमक से परिचित होना चाहती हूँ। मैं एक समाज सेविका हूँ। मैं बच्चों को पढ़ाती हूँ। आपकी चकमक पत्रिका पढ़कर बच्चों को सुनाई। सबको बड़ा मज़ा आया। अब बाल मण्डली की इच्छा है कि; 'दीदी आप भी अपनी रचनाएँ भेजो।' इसलिए मैं अपनी रचना का एक नमूना भेज रही हूँ–

बादल में अंधियारी छाई
रिमझिम करती पानी की
ऊपर से बूँदें आईं
कोयल ने भी गीत सुनाया
सावन आया सावन आया
पेड़ों की डालियाँ हवाओं में झूमें
उड़ते पंछी आसमाँ को चूमें
हवा चलने लगी मतवाली चाल
खिलने लगी फूलों की डाल
मैना ने मुझको बतलाया
सावन आया सावन आया

■ रंजना मीणा, बड़गाँव, खरगोन, म.प्र.

दशहरा

एक बार मेरे माता-पिता और चाचा-चाची और मैं, हम सब दशहरा देखने गए। वहाँ बहुत भीड़ थी। चाचा ने मुझे और मेरे चचेरे दो भाइयों को सबसे आगे पहुँचा दिया। हम तीनों वहाँ जाकर खड़े हो गए जब दशहरा में रावण जल गया तब भी हम वहाँ बैठे रहे। हम सोच रहे थे कि हमारे चाचा लेने आएँगे किन्तु वे नहीं आए। हमारे माता-पिता भी हमारा इंतज़ार कर रहे थे। मुझको घर का रास्ता मालूम था। हम तीनों घर पर पहुँच गए। हमारे माता-पिता भी थोड़ी देर में घर आ गए। हमें घर पर देखकर उन्होंने हमें बहुत डाँटा, कहा कि तुमको वहीं रहना था।

अब्दुल रहमान, आठवीं, उज्जैन, म. प्र.

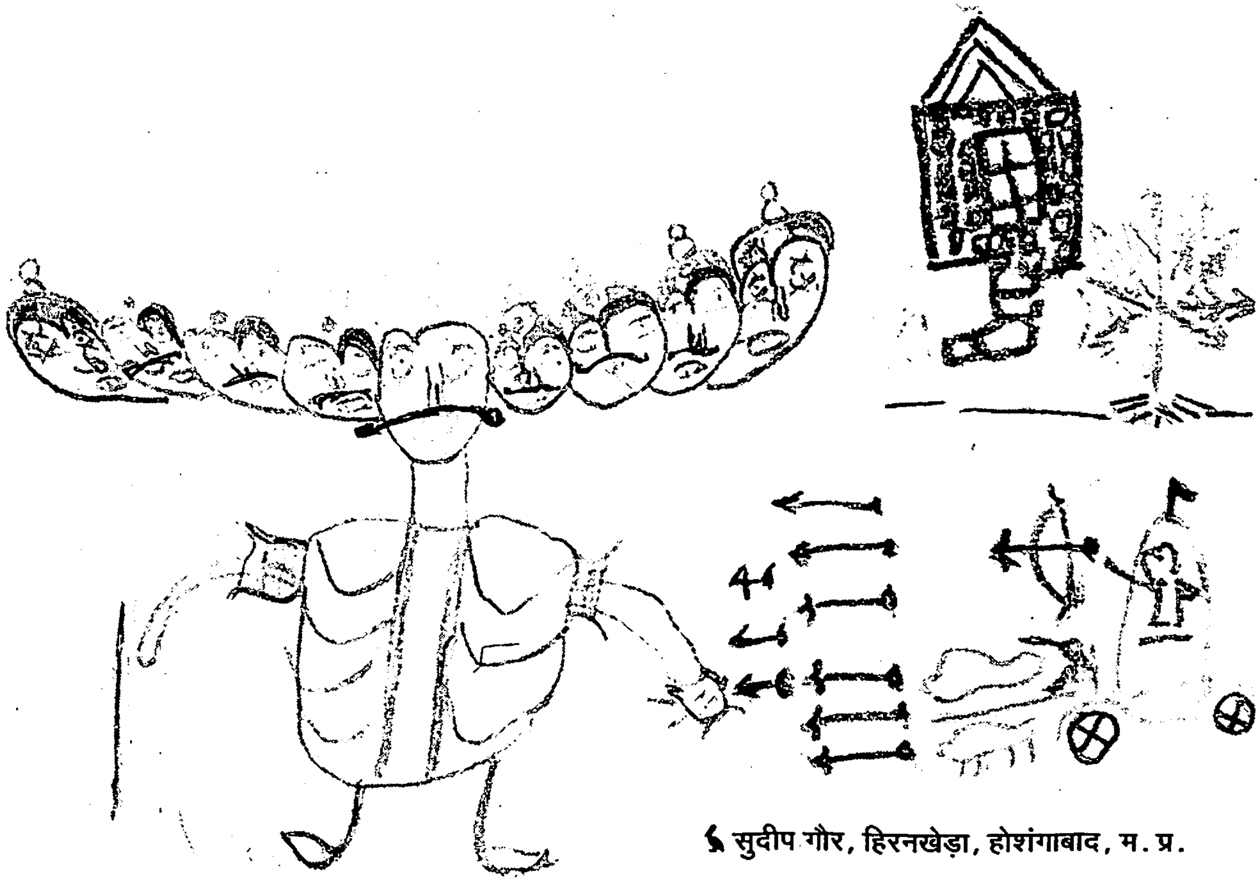

सुदीप गौर, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

थोड़ी-थोड़ी ठण्ड

थोड़ी-थोड़ी ठण्ड अब आने लगी
चुपके से घर में समाने लगी
लोगों को ख़ूब कँपाने लगी
गुदड़ी से रज़ाई हमें भाने लगी
टी. वी. विज्ञापन बरसाने लगी
क्रीम पाउडर बिकवाने लगी
पैसों का ख़र्च बढ़ाने लगी
सबको यह समझाने लगी
जो डरा उसे डराने लगी
थोड़ी-थोड़ी ठण्ड अब आने लगी

रूपेश अग्रवाल, सातवीं, जावर, खण्डवा, म. प्र.

चरखा एक : अर्थ अनेक

इस साल हम लोग अपनी आज़ादी की पचासवीं सालगिरह मना रहे हैं। अक्टूबर का महीना गाँधी जयंती के साथ ही शुरू होता है। आज़ादी के आन्दोलन में गाँधी जी की अपनी एक भूमिका रही है। एक महत्वपूर्ण चीज़ जिसे गाँधी जी ने इस आन्दोलन के दौरान उभारा, वह था चरखा। चरखा यानी दो चकों वाली सूत कातने की छोटी-सी, सरल-सी मशीन। लेकिन इस सरल से उपकरण को भारत के लोगों की आत्मनिर्भरता और अस्मिता या पहचान से जोड़कर गाँधी जी ने इसे स्वतंत्रता संग्राम में एक जबरदस्त हथियार की तरह इस्तेमाल किया था।

चरखा जनमानस में इतना रच बस गया था कि सन् 1931 में जिस तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज घोषित किया गया, उसमें बीचों-बीच चरखा अंकित था। बाद में राष्ट्रीय ध्वज में चरखे की जगह अशोक चक्र ने ले ली।

चरखे को गाँधी जी, बच्चों की बुनियादी शिक्षा से भी जोड़कर देखते थे। एक ज़माने में देश भर के कई स्कूलों में तकलियाँ और चरखे बाँटे गए थे। शुरू-शुरू में कई सालों तक स्कूलों में बच्चे सूत कातते थे। फिर धीरे-धीरे वहाँ भी यह सब ठप हो गया। आम जीवन से भी चरखे को लगभग पूरी तरह भुला दिया गया है।

इसलिए जब हमें चरखे की याद आई तो लगा कि उस याद को तुम सब के साथ बाँटें। चरखे के बहुत सारे रोचक पहलू हैं। उसके विकास का इतिहास, आजादी के आन्दोलन में उसका सामाजिक - आर्थिक और राजनैतिक महत्व, आत्मनिर्भरता की दृष्टि से उसकी उपयोगिता, उससे सूत कैसे काता जाता है आदि। पर हमने सोचा कि यह सब बाद में। अभी पहले तरह-तरह के चरखों से परिचय कर लें - उनके चित्रों के माध्यम से। यह चित्र कई अलग-अलग स्रोतों से लिए हैं। कुछ चित्रकारी की प्राचीन कांगड़ा या मुगल शैली के चित्रों से, तो कुछ हमारे आसपास के ऐसे लोगों की मदद से जो आज भी अपने हाथों से काते हुए सूत से बुना कपड़ा पहनते हैं। हम इन सबके आभारी हैं।

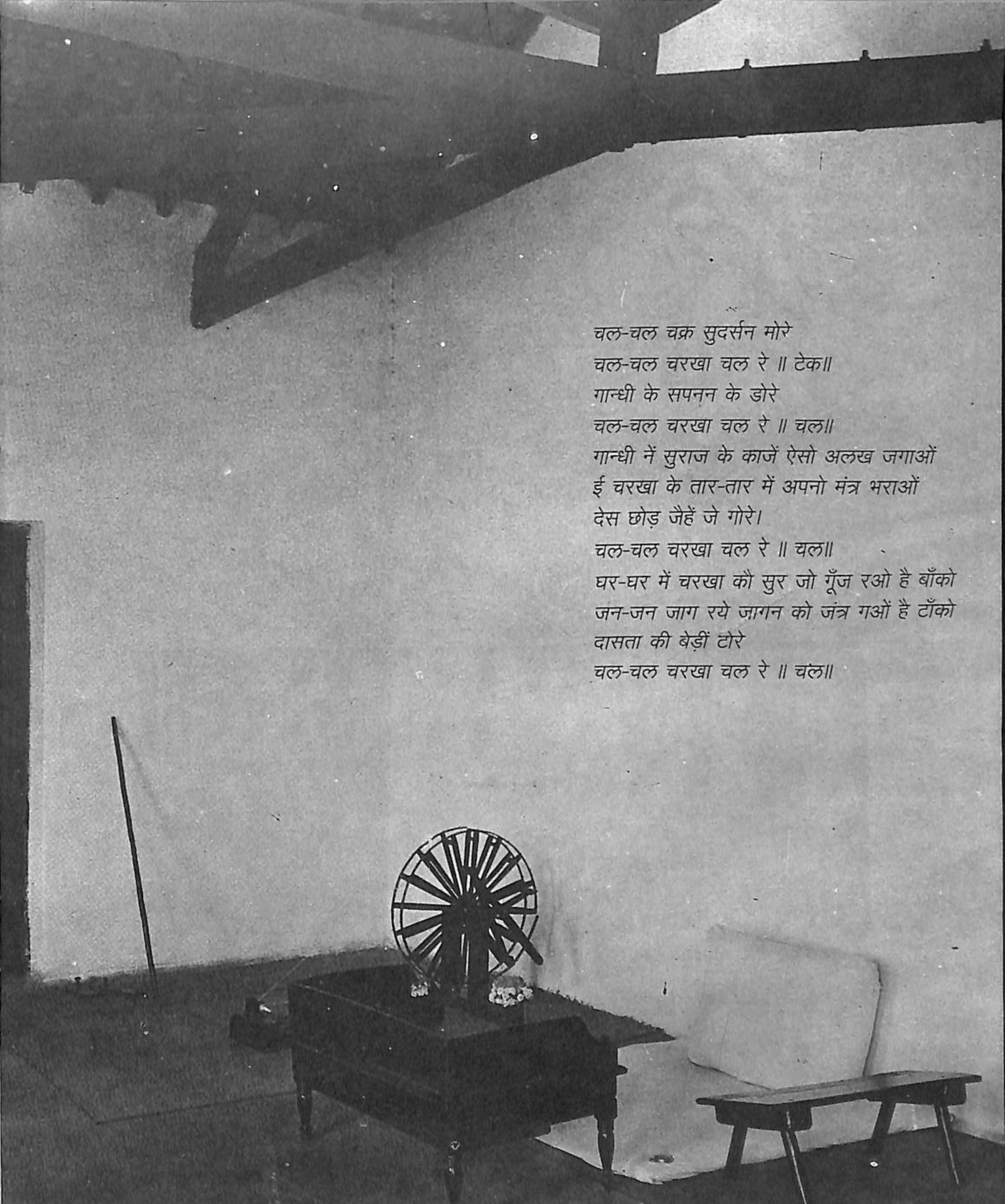

चल-चल चक्र सुदर्सन मोरे
चल-चल चरखा चल रे ॥ टेक॥
गान्धी के सपनन के डोरे
चल-चल चरखा चल रे ॥ चल॥
गान्धी नें सुराज के काजें ऐसो अलख जगाओं
ई चरखा के तार-तार में अपनो मंत्र भराओं
देस छोड़ जैहें जे गोरे।
चल-चल चरखा चल रे ॥ चल॥
घर-घर में चरखा कौ सुर जो गूँज रओ है बाँको
जन-जन जाग रये जागन को जंत्र गओं है टाँको
दासता की बेड़ीं टोरे
चल-चल चरखा चल रे ॥ चल॥

गाँधी जी द्वारा अहमदाबाद के पास साबरमती नदी के किनारे स्थापित साबरमती आश्रम में रखा वह चरखा जिस पर वे सूत कातते थे। ऊपर दिया गीत सन् 1920-30 में प्रचलित था। गीत 'गाँधी लोकगीत' से साभार।

पेटी चरखा। इसे यरवदा चक्र भी कहते हैं।

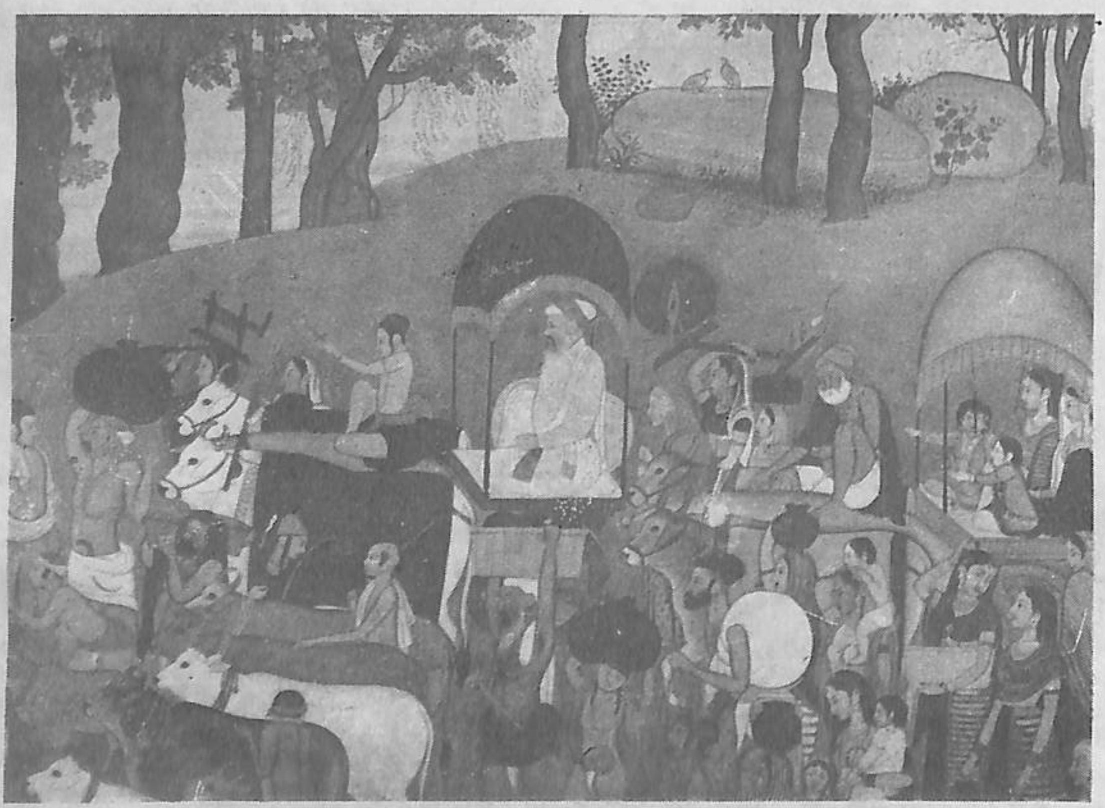

कांगड़ा शैली के इस चित्र में मथुरा के राजा नंद को मथुरा छोड़कर वृन्दावन जाते हुए दिखाया गया है। पालकी के ठीक पीछे एक महिला सिर पर चरखा लिए जा रही है।

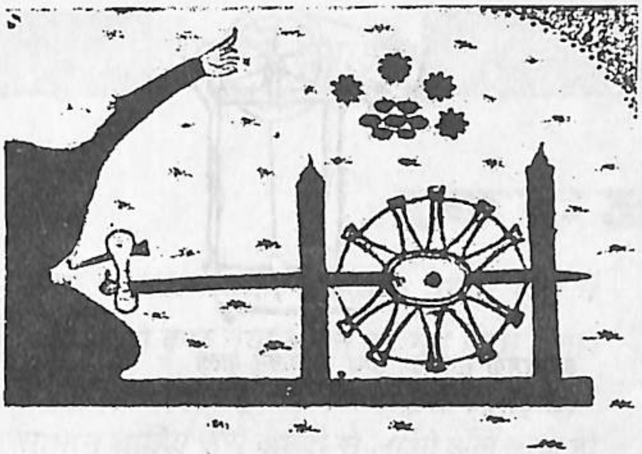

धुरी के साथ लगे हैंडिल वाला चरखा। यह एक मुग़लकालीन चित्र का हिस्सा है।

एक मुगल बादशाह औरंगज़ेब के ज़माने का एक चित्र। इस चित्र में यह महिला घर के ऊँचे फ़र्श पर बैठकर और चरखा नीचे ज़मीन पर रखकर सूत कात रही है। यह चित्र अपने मूल चित्र से एक सौ साठ गुना बड़ा करके दिखाया गया है।

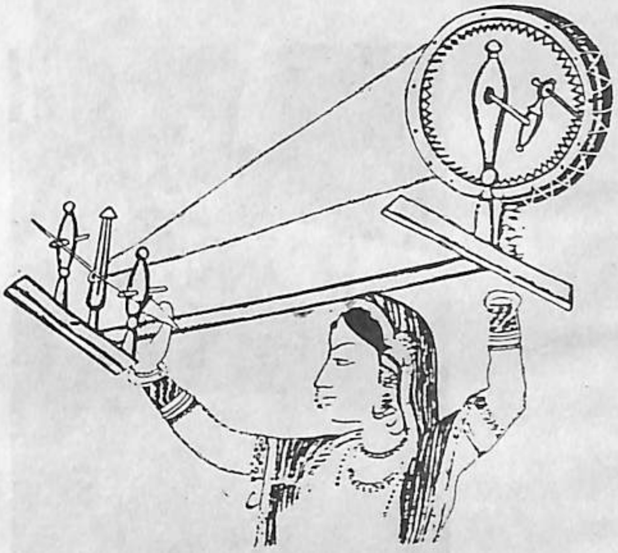

यह शिमला के शासकीय संग्रहालय में मौजूद सोलहवीं सदी का कांगड़ा शैली का एक चित्र है।

बादशाह जहाँगीर के दौर का एक चित्र जिसके एक हिस्से में बगीचे में बैठी तीन औरतें चरखे पर सूत कात रही हैं।

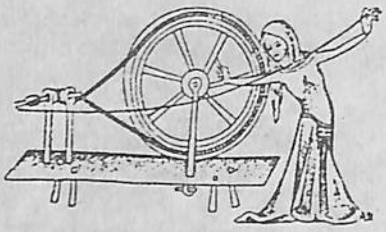

सन् तेरह सौ के आसपास यूरोप में इस तरह का चरखा इस्तेमाल होता था।

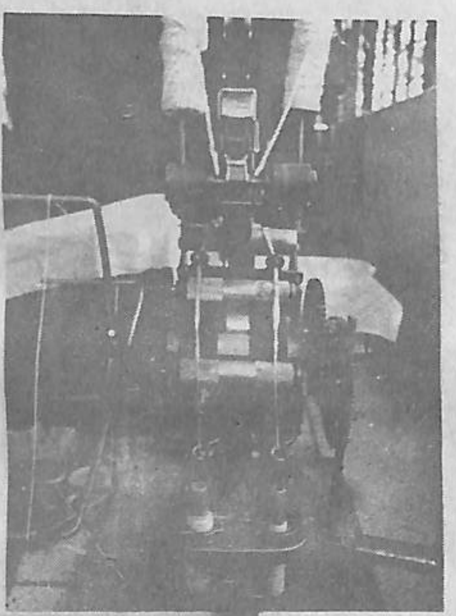

भोपाल के श्री मुक्तेश्वर सिंह के घर में रखा अम्बर चरखा। वे इस पर सूत कातते हैं तथा उसी सूत से बुने कपड़े पहनते हैं।

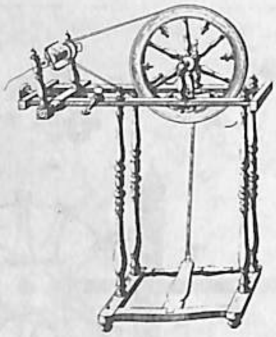

अठारहवीं सदी का हाथ से चलने वाला एक यूरोपीय चरखा।

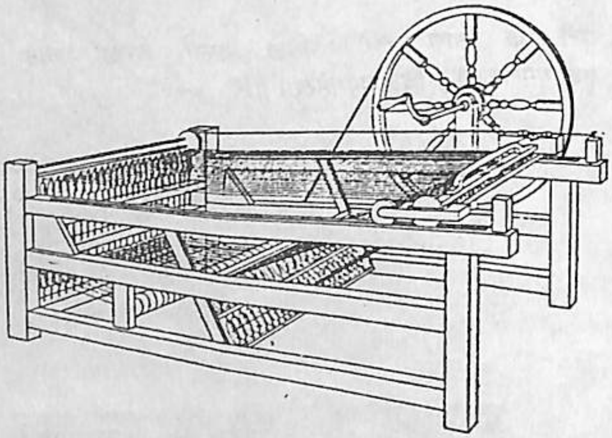

स्पिनिंग जेनी – सूत कातने की मशीन। यह हाथ से चलाई जाती थी। इसकी ख़ासियत यह थी कि यह सामान्य चरखे से बहुत तेज़ चलती थी और कम समय में काफ़ी सारा सूत कात देती थी।

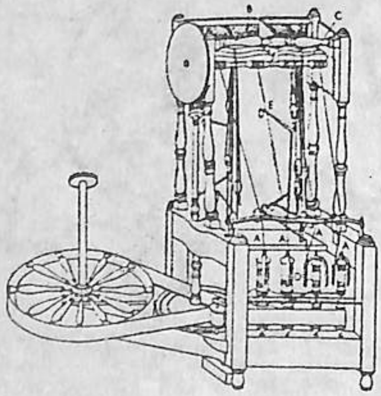

चरखे का एक आधुनिक रूप। इसे आर्कराईट वॉटर फ्रेम कहते हैं, क्योंकि यह पानी के बहाव की मदद से चलाया जाता है।

एक के ऊपर एक

जब भी चकमक का नया अंक तुम्हारे हाथ में आता है तो कुछ नया बनाने का मन होता होगा। है न ! तो चलो, कुछ नया बनाने के लिए जो सामान चाहिए उसे जल्दी से लाओ और शुरू हो जाओ । चिंता छोड़ो। बस! सफ़ेद कार्डशीट (अलग-अलग रंगों वाली भी ले सकते हो), कैंची और परकार का जुगाड़ करो। और हाँ, परकार के साथ पेंसिल भी लेना पड़ेगी।

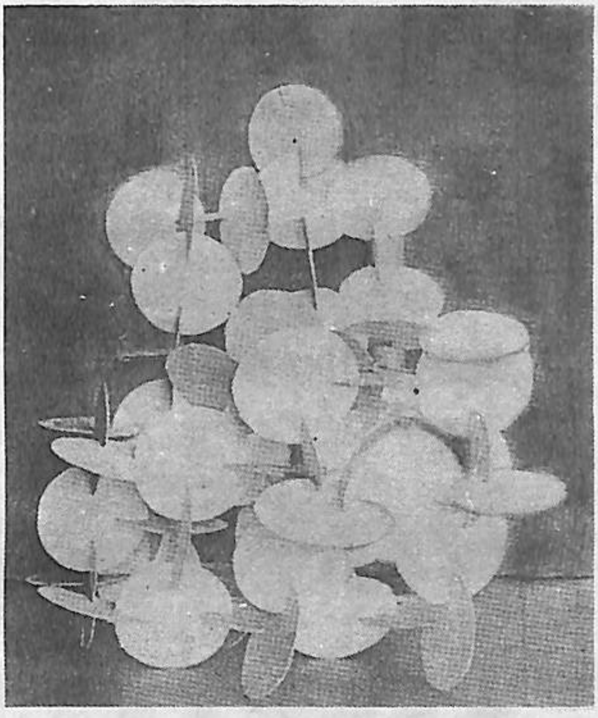

सबसे पहले तो कार्डशीट से एक निश्चित आकार के कई टुकड़े काटो। आकार तो किसी भी तरह का हो सकता है, जैसा तुम चाहो। लेकिन, शुरुआत गोल आकार से कर सकते हो। तो बनाओ, पर एक नहीं कई सारे। मतलब , शुरू में बीस टुकड़े बनाओ। फिर ज़रूरत के अनुसार और काटना। इसके लिए तुम परकार की सहायता ले सकते हो। अब यह तुम्हें तय करना है कि कम-से-कम मेहनत में अधिक-से-अधिक टुकड़े कैसे बन जाएँ। जब कार्डशीट के कई सारे टुकड़े बन जाएँ तो हरेक टुकड़े में किनारों पर आमने-सामने चार कट लगाओ। ध्यान रहे कि कट गोले के व्यास के एक चौथाई से अधिक भाग में न लगें। फिर दो टुकड़ों को एक-दूसरे के कट में फँसाओ। नीचे के चित्र ध्यान से देखो तो समझ जाओगे कैसे।

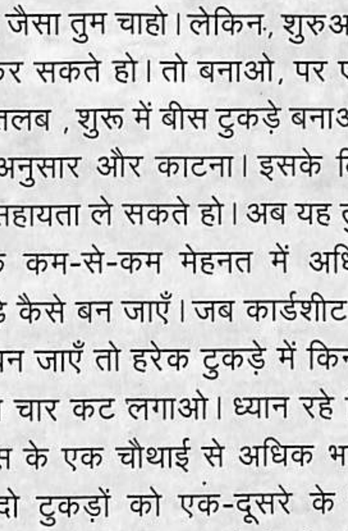

अब तुम्हें बाकी बचे टुकड़ों में कट लगाने और उन्हें एक-दूसरे में फँसाने के बारे में सोचना है। इसे इस तरह से करना है ताकि तुम्हारा मॉडल भी चित्र में दिखाए गए कई मंजिलों वाले मॉडल जैसा दिखे।

यह तो हो गया एक मॉडल। अब तुम खुद सोच-समझकर अलग-अलग आकारों के, मसलन - तिकोना, वर्गाकार , छहभुजावाले और आठभुजावाले टुकड़े बनाओ। तुम अपनी पसन्द से और कई तरह के मॉडल बना सकते हो, जरा सोचकर तो देखो।

इस मॉडल को और अधिक मज़बूत बनाना हो तो कार्डशीट की जगह गत्ते का इस्तेमाल कर सकते हो। अगर इसे और अधिक सुन्दर और आकर्षक बनाना चाहो तो सफ़ेद कटे हुए टुकड़ों पर रंग कर लो। और क्या कर सकते हो ? ज़रा सोचो ! इन टुकड़ों पर कुछ चित्रकारी, अपने मन की कलाकारी करके देखो। यह तो तुम ही बता सकते हो कि कौन-सा मॉडल अधिक आकर्षक है - सफ़ेद या रंगीन !

मोटर साइकिल से गिरे

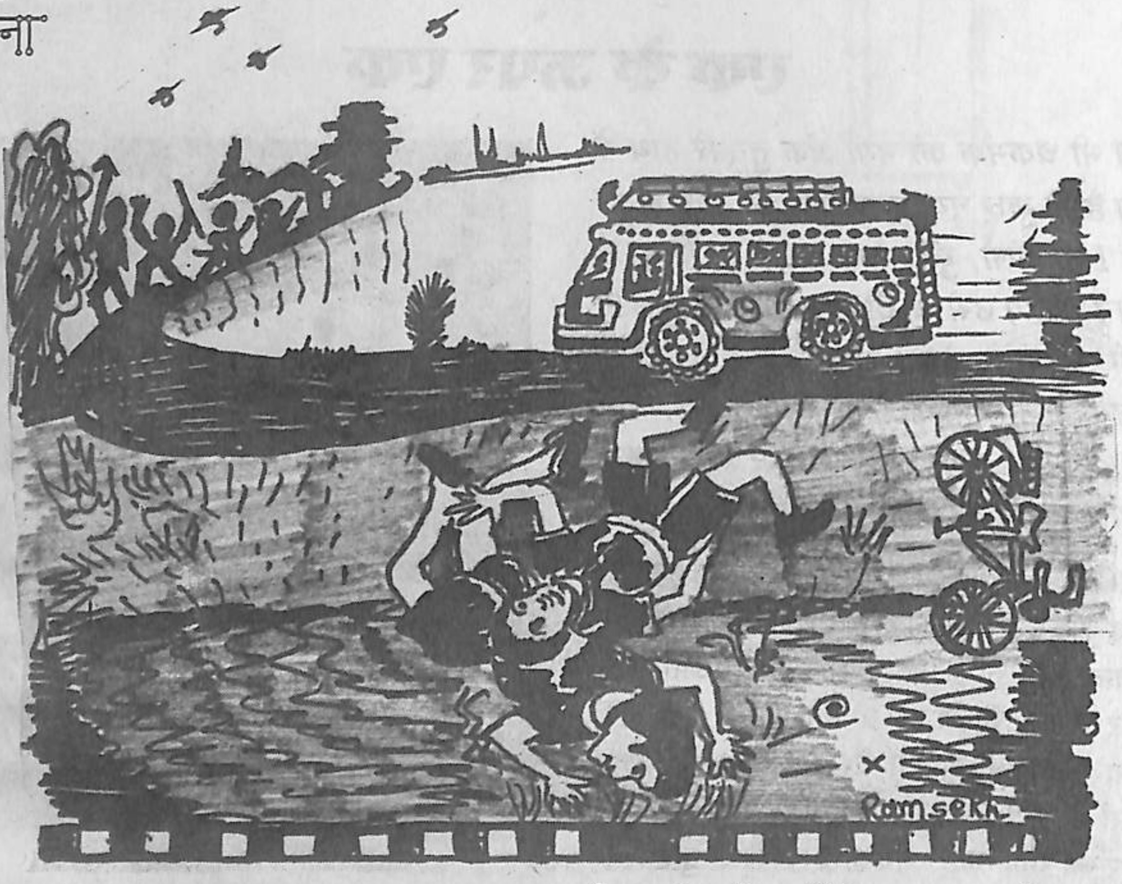

राम शेख पंडित, नौवीं, लालपुर, समस्तीपुर, बिहार

एक बार की बात है जब मैं सातवीं में पढ़ता था। मैं और मनोहर लाल विद्यालय जा रहे थे। गाँव से विद्यालय आठ किलोमीटर दूर था पर पक्की सड़क होने के कारण आसानी से हम लोग वहाँ पहुँच जाते थे। विद्यालय का नाम था शासकीय माध्यमिक शाला छिदगाँव।

एक बार रास्ते में हमें एक बस मिली। बस बहुत तेज़ी से आ रही थी। हम दोनों एक ही मोटर साइकिल पर सवार थे। आगे हम पीछे से बस आ रही थी। मैंने मनोहरलाल से कहा, 'मोटर साइकिल बगल से ले चलो।' मनोहरलाल ने मोटर साइकिल बगल से काट लिया। लेकिन बस वाला ठहरा रंगदार। उसने बहुत सटाकर बस पास की जिससे मेरी मोटर साइकिल की कैरियर में ठोकर लग गई। भगवान की कृपा थी कि मैं आगे बैठा था। हम दोनों बगल के गड्ढे में गिर गए, हम दोनों को कुछ नहीं हुआ। हल्की-फुल्की चोट लगी थी। लेकिन मोटर साइकिल का हैंडिल मुड़ गया था। मुझे गिरता देखकर एक आदमी ने हल्ला कर दिया और बस रोक ली गई। तब तक हम दोनों उठकर बस के नज़दीक पहुँच गए। गाँव के लोग ड्राइवर को पीटने के लिए उतावले हो रहे थे। मैंने कहा, इसको आप लोग एक बार माफ़ कर दें, शायद दोबारा नहीं करेगा, गाँव वाले मान गए, नहीं तो पिटाई लगती ।

मनीष कुमार मालाकार, सातवीं, भादूगाँव, टिमरनी, होशंगाबाद, म. प्र.

मेरा पन्ना

दो पहियों की बैल गाड़ी

किसानों की सबसे प्यारी
पेट्रोल का नाम न लेती
दो पहियों से करे सवारी
इसका इंजन बड़ा बलवान
इसको नहीं चाहिए आराम
घास से ही काम चलाता
पानी पीकर मौज मनाता
खेती से इसका है नाता
किसानों को यही भाता
देखो कैसा रोब जमाता
अकड़-अकड़कर चलता जाता

टीकमचन्द पाटीदार, खिड़की, देहरिया साहू, देवास, म.प्र.

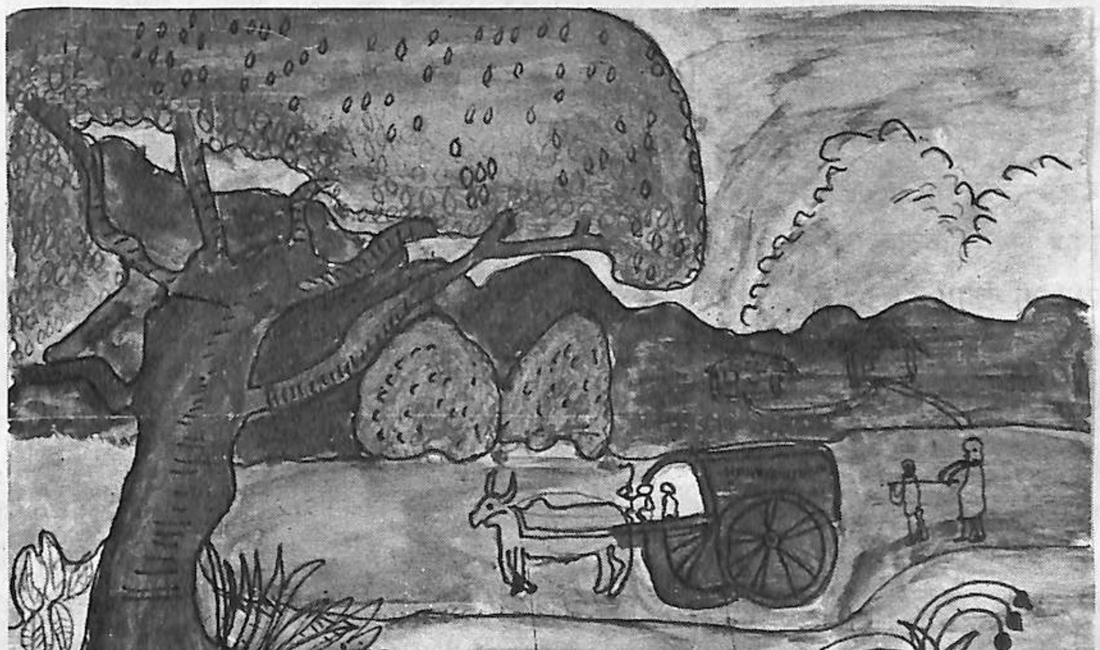

प्रमोद, दसवीं, पंचपुर, डादौली, सीतापुर, उ.प्र.

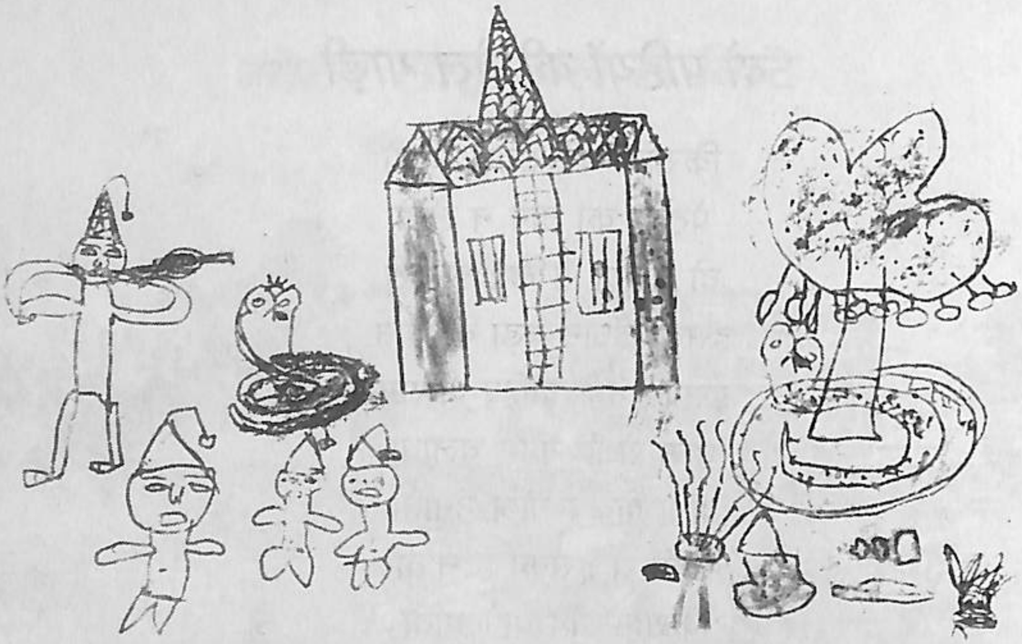

✍ जोगेश्वर प्रसाद यादव, चौथी, मुरमुंदा, दुर्ग, म. प्र.

मदारी

देखो दूर देश से मदारी आया
साथ में अपने भालू लाया
बीच सड़क में भालू का नाच दिखाया
देखो दूर देश से मदारी आया
बूढ़ों-बच्चों का दिल बहलाया
फिर उसने फैलाई झोली
अब तो रुपए डालो भाई
फिर सब ने ताली बजाई
देखो दूर देश से मदारी आया
देखो दूर देश से मदारी आया

✍ नितिन खन्ना, छठवीं, फालना, राजस्थान

तितली

आहा तितली प्यारी-प्यारी
बन जाओ तुम मित्र हमारी
तुमको हम नहीं पकड़ेंगे
रंग तुम्हारे देखेंगे
क्या तुम हमसे डरती हो
दूर-दूर क्यों रहती हो
पास हमारे आओ
हमसे यूँ शरमाओ न

✍ साक्षी मिश्रा, तीसरी, मंडला, म. प्र.

इंडोनेशियाई कहानी

दादा जी को तोहफा

❑ जसरान सफानो

दूर पहाड़ों पर एक छोटा-सा गाँव था। दूर-दूर बने घरों वाला, शांत अकेला-सा गाँव जहाँ हो-हल्ले का नाम तक नहीं। पहाड़ों से एक नदी आती थी, जो इस गाँव के बीच से बहती थी। नदी का पानी साफ़ था और वह पहाड़ियों-चट्टानों के बीच मुड़ती, गिरती, रुकती हुई-सी आती थी। गाँव में आते-आते उसकी रफ़्तार तेज़ हो जाती थी। इसी गाँव में एक लड़का रहता था। इसका नाम बाकरी था। रात में जब गाँव वाले अपने-अपने बिस्तरों में होते तो नदी के पानी की कलकल की आवाज़ उनको साफ़ सुनाई देती थी। रोज़ सुबह उनकी नींद एक दूसरी आवाज़ से खुलती थी। यह आवाज़ थी दूर नदी पार बजते ढोल की। ढोल के बाद मस्जिद की मीनार से गूँजती अज़ान की आवाज़ आती। रात में नदी की कलकल, सुबह ढोल का बजना, उसके बाद अज़ान, ये सब मानो गाँव वालों की ज़िंदगी का एक हिस्सा बन चुके थे।

अज़ान की आवाज़ और किसी की नहीं- बाकरी के दादू की थी, जो पूरे गाँव को रोज़ सुबह सुनाई देती। उनकी आवाज़ बहुत बुलन्द और भरी हुई थी। जब वो अज़ान देते तो लगता जैसे ज़मीन से उठने वाली यह आवाज़ जन्नत तक पहुँच रही हो। बाकरी के दादू अपने काम के बड़े पाबन्द थे। कभी किसी दिन अपने काम में उन्होंने कोई कोताही नहीं बरती। लेकिन एक दिन की बात है। सुबह हो गई पर अज़ान की आवाज़ नहीं आई थी। गाँव में सभी को ख़ाली-ख़ाली सा लग रहा था।

बाकरी रहता था गाँव के एक तरफ और दादाजान का घर था दूसरी तरफ। उसने आज अज़ान नहीं सुनी। वह परेशान हो गया, आज क्या बात है? दादू को क्या हुआ? कहीं बीमार तो नहीं हो गए? या फिर कुछ और काम तो नहीं निकल आया। लेकिन क्या काम हो सकता था? उसे सुबह उठकर रोज़ सबसे पहले नमाज़ पढ़ने की आदत थी। आज उसका मन ठीक नहीं था। दादू की फ़िक्र थी। क्या करे, पहले दादू की खोज-ख़बर करे या फिर मस्जिद में जाकर नमाज़ अदा करे। ठीक है, मस्जिद ही चला जाए। दादू की ख़बर भी लग जाएगी और अपनी नमाज़ भी हो जाएगी।

वह पहुँचा मस्जिद में। चारों तरफ देखा। दादू कहीं नज़र नहीं आए। सबसे पूछा, किसी को मालूम नहीं। क्या करे? कहाँ मालूम करे? क्या वे बीमार हैं? नमाज़ पढ़ते वक़्त यही सब उसके दिमाग़ में घूमता रहा।

नमाज़ ख़त्म कर जल्दी-जल्दी दादू के घर की तरफ चल दिया। थोड़ी ही दूर गया था कि सोचने लगा, क्या ख़ाली हाथ दादू के पास जाऊँ? नहीं, ख़ाली हाथ नहीं। कुछ न कुछ तोहफा लेकर जाना चाहिए। क्या ले जाए? एकदम विचार आया- अखरोट। क्योंकि दादू को अखरोट बहुत पसन्द हैं। ठीक है, वह अखरोट ही ले जाएगा।

सुबह का वक़्त तो था ही, धुंध बहुत गहरी थी। फिर भी वह उस पहाड़ी की तरफ चल दिया जहाँ अखरोट के पेड़ थे। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी पर मस्जिद जाने से पहले ही उसने बड़ा कोट पहन लिया था। अब वह जैसे-जैसे पहाड़ी की तरफ बढ़ रहा था उतनी ही सर्दी ज़्यादा महसूस कर रहा था। कोट के बटन पूरे बन्द कर लिए, गले तक। फिर भी सर्दी अपना पूरा असर दिखा रही थी।

चलते-चलते भी वह कुछ न कुछ सोचता जा रहा था, जैसे, वह ज़्यादा से ज़्यादा अखरोट इकट्ठे करेगा। दादू बहुत खुश होंगे कि वह अखरोट लाया है। वह दादू को अपने हाथ से खिलाएगा। पूरी की पूरी गिरी निकालकर देगा। अखरोट के छिलके, हाँ छिलकों को भी वह काम में ले सकता है। सख़्त तो होते ही हैं। उनसे अच्छे-अच्छे, छोटे-छोटे खिलौने बनाए जा सकते हैं। सुन्दर-सुन्दर मालाएँ बनाई जा सकती हैं। दादू तो बहुत अच्छी माला बनाते हैं। उनकी बनाई हुई माला बिकती भी बहुत महँगी है। एक-एक माला पचास रुपए की बिक जाती है। अगर वह सौ मालाएँ बना ले तो वह बहुत मालामाल हो

सकता है। पर, सौ मालाओं के लिए बहुत सारे अखरोट चाहिए। जब दादू के पास इतना रुपया हो जाएगा तो फिर कोई फ़िक्र नहीं रहेगी। वह मन ही मन हिसाब-किताब करने लगा। एक माला के पचास रुपए तो सौ माला के.... पचास, सौ, डेढ़ सौ...... वह उंगलियों पर गिनने लगा .... लेकिन उलझ गया हिसाब। उसने ज़्यादा तो पढ़ा ही नहीं था। तीसरी में ही तो पढ़ता था... बार-बार गिनता, जोड़ता, गुणा-भाग करता और उलझ जाता। ख़ैर छोड़ो। कितना ही हो जाए। दादू ज़रूर ढेर सारे अखरोट देखकर खुश होंगे। जब दादू खुश होंगे तो वह भी खुश होगा।

सोच-सोचकर मन ही मन खुश होता। सीटी बजाता जा रहा था। फिर मन के विचारों में एक झटका लगा, रुका और सोचने लगा, अगर..... अगर गाँव के दूसरे लड़के पहाड़ी पर उससे पहले पहुँच गए तो.... फिर तो उन्होंने सारे अखरोट उठा लिए होंगे। अगर अकेला देखकर उसको उन्होंने पीट दिया? नहीं, नहीं उसे ऐसा नहीं सोचना चाहिए। वह चलता गया।

पहाड़ी का ऊपरी मैदान आया। अभी अखरोट के पेड़ दूर थे। सूरज थोड़ा निकला था, आसमान में लाली अभी छाई हुई थी। वह फिर चलने लगा। उसने देखा कि चमगादड़ वापस जा रहे हैं, क्योंकि दिन निकल रहा है तो उनका सोने का वक़्त हो रहा है। वह तेज़ी से चलने लगा। अखरोटों के पेड़ों के बीच पहुँचकर ही उसने साँस ली। चारों तरफ नज़र दौड़ाई कहीं कोई नहीं था। जान में जान आई।

पेड़ों के झुरमुट में घुसा। देखा, अखरोट ही अखरोट बिखरे पड़े हैं। रात को शायद आँधी चली थी, जभी तो इतने अखरोट टूटे पड़े हैं। खुशी-खुशी उसने अखरोट इकट्ठे करने शुरू कर दिए। अपने कोट की जेबों में भर लिए। उसके कोट की जेब बड़ी थी। कोट अगर ख़राब हो गया तो घर जाकर ठीक भी कर लेगा - उसने सोचा।

अचानक - उसे कुछ शोर सुनाई दिया। कुछ लोगों के आने की आवाज़ थी। ज़रूर ये गाँव के दूसरे लड़के हैं। वह मन में डरा, 'वे ज़रूर नाराज़ होंगे, क्योंकि वह उनसे बिना कहे सुबह-सुबह ही आ गया था। कहीं उन्होंने मुझसे सारे अखरोट छीन लिए तो? अगर उन्होंने मेरी पिटाई कर दी? वे मुझे लालची भी कहेंगे और....? इससे पहले कि वे सब लड़के ऊपर आ जाएँ, उसे छुप जाना चाहिए।'

वह एक झाड़ी में छिप गया। ऐसी झाड़ी में जो चारों तरफ से बिल्कुल ढकी हुई थी। मन में डर। वह बार-बार खुदा का नाम ले रहा था।

"मुझे कोई देख न ले।" वह इतना चुपचाप था कि उसकी साँस की आवाज़ भी सुनाई ना दे। वह ऐसी झाड़ी में था जहाँ से वह आने वालों को सिर्फ़ देख सकता था। उसने देखा- पाँच लड़के हैं, वे सब उसी स्थान पर पहुँच गए हैं। सभी गाँव के हैं और बड़े-बड़े हैं।

पाँचों लड़के इधर-उधर देखने लगे। परेशान से। एक-दूसरे से पूछे लगे, "क्या हमें बहुत देर हो गई है?"

दूसरे ने कहा, "एक भी अखरोट ज़मीन पर नहीं है।"

"क्या बदकिस्मती, इतनी दूर चलकर भी आए और नतीजा कुछ नहीं", तीसरा बोला।

"कोई हमसे पहले ही यहाँ पहुँच गया है", सबसे तगड़े लड़के ने कहा।

फिर अचानक जैसे सभी को ख्याल आया हो, "ज़रूर बाकरी यहाँ आया होगा, वही सबसे पहले उठता है, सुबह ही सुबह।"

एक लड़का बोला, "वह रोज़ सुबह मस्जिद में जाता है न, नमाज़ पढ़ने।"

बाकरी झाड़ी में छुपा-छुपा सब सुन रहा था। मन का डर बढ़ता ही जाता था। जितना डरता उतना ही खुदा को याद करता। 'हे अल्ला ताला, मेरी जान बचा।'

पाँचों लड़के परेशान थे। क्या करें, उनको तभी घास पर पड़ी ओस की बूँदों पर पैरों के निशान दिखाई दिए। एक चिल्लाया, "देखो देखो, बाकरी के पैरों के निशान, वही सारे अखरोट उठाकर ले गया है।"

दूसरा बोला, "जल्दी चलो, अभी तो हम उसको पकड़ सकते हैं। रास्ते में ही होगा - उससे अखरोट भी छीन लेंगे।"

तगड़ा लड़का कुछ सोचता रहा। कुछ देर सोचकर बोला, "नहीं, यह ठीक नहीं होगा। कड़कती ठण्ड, इतने सबेरे उठना, मस्जिद जाना, फिर यहाँ इतनी दूर आना, यह सब उसने किया और हम सब, मज़े से बिस्तरों में सोए रहे, उठकर अलसाए हुए यहाँ आ गए। इसलिए उन अखरोटों पर उसी का हक़ है, हमारा नहीं। अगर हमें अखरोट चाहिए तो सुबह-सुबह उठना चाहिए। उससे पहले यहाँ पहुँचना चाहिए। उससे छीनना तो सरासर बेईमानी होगी।"

यह सुनते ही बाकी सबके चेहरे उतर गए। यह तो सभी जानते थे कि वह ठीक कह रहा है। अगर वे आलसी न होते तो सारे अखरोट उन्हीं को मिलते। सभी चुपचाप, चल दिए वापस, अपने घरों की तरफ।

झाड़ी में छुपा-छुपा बाकरी चुपचाप सब कुछ सुन रहा था। उसने देखा कि सब वापिस चल दिए हैं। उसका मन पसीज गया। उसने मन में खुदा का शुक्रिया अदा किया। उसकी जान जो बच गई थी। अगर उन लड़कों ने उसे देख लिया होता तो उसका

भुर्ता बन गया होता। उसका ध्यान उन लड़कों के उतरे हुए चेहरों पर गया। कितने दुःखी थे वे सब। उनको एक भी अखरोट नहीं मिला था आज। अचानक वह ज़ोर से चिल्लाया। उनको आवाज़ दी। "रुको, रुको" कहता हुआ उनके पीछे पीछे भागा।

सभी लड़के रुके। सबको ताज्जुब, "यह कहाँ से निकल आया। ऊपर पहाड़ी पर तो नहीं था।" बाकरी उनके पास पहुँचा, हाँफते-हाँफते बोला, "मुझे माफ़ करना, दोस्तों, आज मैंने सारे अखरोट उठा लिए थे। लो, कुछ तुम भी ले लो। हम सब दोस्त हैं न, हम सबको मिल-बाँटकर लेना चाहिए।"

सब परेशान, यह क्या हुआ, कैसे हुआ। सबसे बड़ा लड़का बोला, "नहीं-नहीं, शुक्रिया बाकरी, तुम सबसे पहले उठे हो, यहाँ पहुँचे, तुमने मेहनत की, अखरोट इकट्ठे किए, इन पर तुम्हारा ही हक़ है।"

"बेवकूफ़ी न करो।" बाकरी ने उसका हाथ पकड़ कर कहा, "मैं सच कह रहा हूँ। थोड़े अखरोट तुम भी ले लो। मैं बताता हूँ ऐसा क्यों हुआ। आज दादू ने नमाज़ नहीं पढ़ी, वे मस्जिद नहीं गए। मैंने सोचा उनसे मिलने जाऊँ तो कुछ अखरोट भी लेता जाऊँ। शायद वे बीमार हों। अखरोट देखकर खुश हो जाएँगे। बस मैं उनको अपना हिस्सा दे दूँगा। बाकी सब तुम ले लो।"

एक लड़का बोला, "हाँ, आज सुबह तुम्हारे दादू किसी से बात कर रहे थे। कह रहे थे कि उनको सर्दी लग गई है और जुकाम हो गया है। ठीक होने में कुछ वक़्त लग जाएगा। फिर वे मस्जिद जाएँगे।"

बड़ा लड़का कहने लगा, "हम ऐसा करते हैं, बाकरी के हिस्से के अखरोट हम आपस में बाँट लेते हैं। फिर हम दादू के पास चलेंगे और बाकी सारे अखरोट उन्हीं को दे देंगे। वे जब ठीक होंगे तो हम उनकी बुलन्द आवाज़ से उठती अज़ान फिर सुन सकेंगे।"

सबने हाँ में हाँ मिलाई। धुंध साफ़ हो गई थी। सब लड़के खुश। एक दूसरे के कंधे पर हाथ रखकर चल दिए। सूरज अब पहाड़ी के ऊपर आ गया था। ❑

सभी चित्र : धनंजय

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के सौजन्य से 'आधुनिक एशियाई कहानियाँ' से साभार)

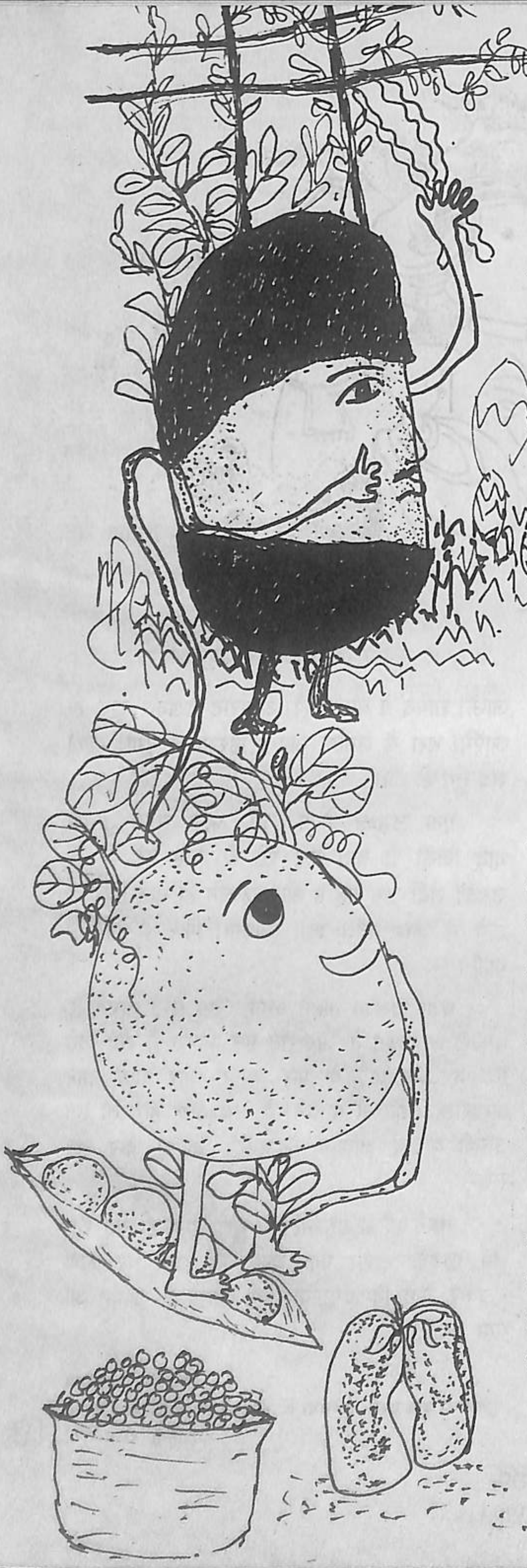

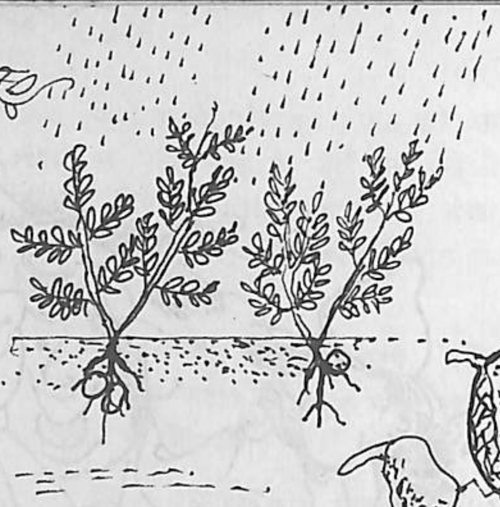

पूँछ वाले दा

सभा में एक दिन पधारे
पूँछ वाले दाने सारे
मूँगफली थी सभापति
सबके बीचों-बीच डटी
उसने सबसे कहा सुनो
एक पूँछ है हम सबको
सोचो उसका क्या करें?

छोटा-सा मोठ शर्माता उठा
धीरे-से वह कहने लगा
पूँछ से मैं धरती में जाऊँ
और बहुत से दाने उगाऊँ

छाती फुलाकर आई चौलाई
और सबसे कहने लगी
पूँछ से ही मैं शक्ति पाऊँ
तभी तो मैं ऊपर जाऊँ

गोलमटोल मटर हुआ खड़ा
बात अपनी कहने लगा
पूँछ यानी पाँव मेरे
इसी से तो ये कदम बढ़े

नों की सभा

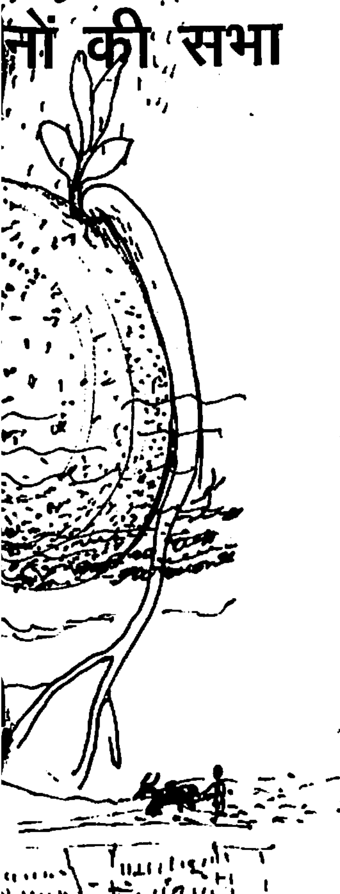

मसूर बोली, दिखती मैं बारीक
पर ताकत है तुमसे अधिक
पानी पीकर मैं खूब फूलूँगी
पूँछ लेकर ज़मीन में जाऊँगी

हरे कोट में मूँग उठी
रौब से वह कहने लगी
ऐसे चढ़ूँगी, वैसे चढ़ूँगी
पूँछ से ही मैं आगे बढ़ूँगी
दाने उगेंगे, बच्चे खाएँगे
प्रोटीन सबके पेट में जाएँगे

सब चिल्लाए नहीं-नहीं
मनुष्य से रिश्ता बिलकुल नहीं
वह तो है स्वार्थी पक्का
सब जगह चाहता अपनी सत्ता

मसूर बोली रुको, ज़रा सुनो
सुनकर तुम उस पर गुनो
हम यहाँ पर आए कैसे?
खेत में उग पाए कैसे?

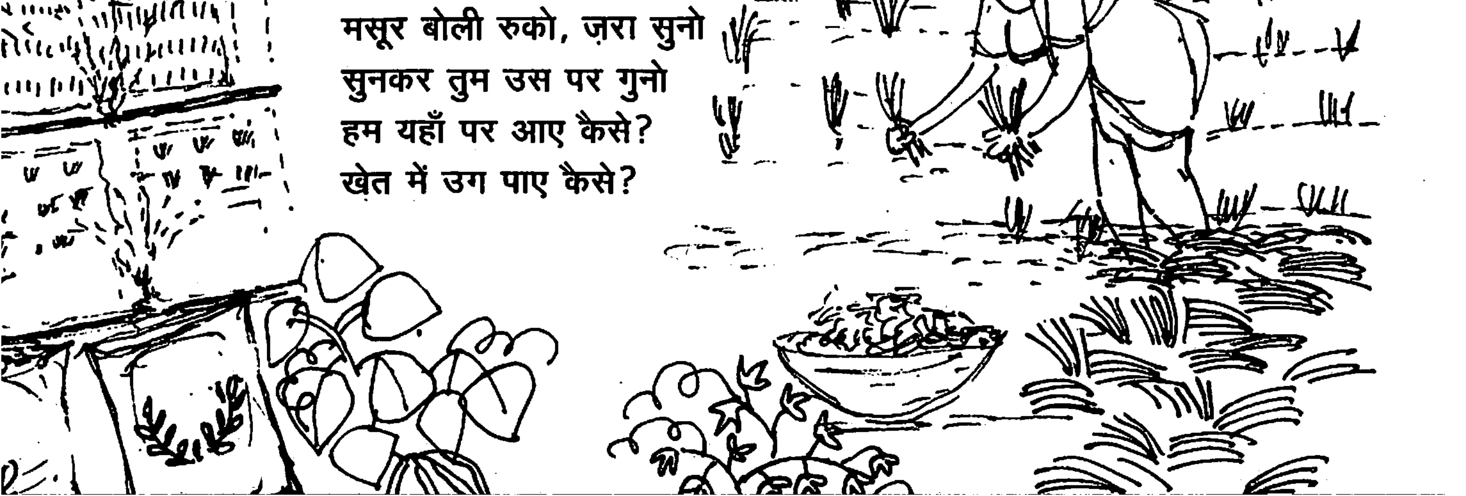

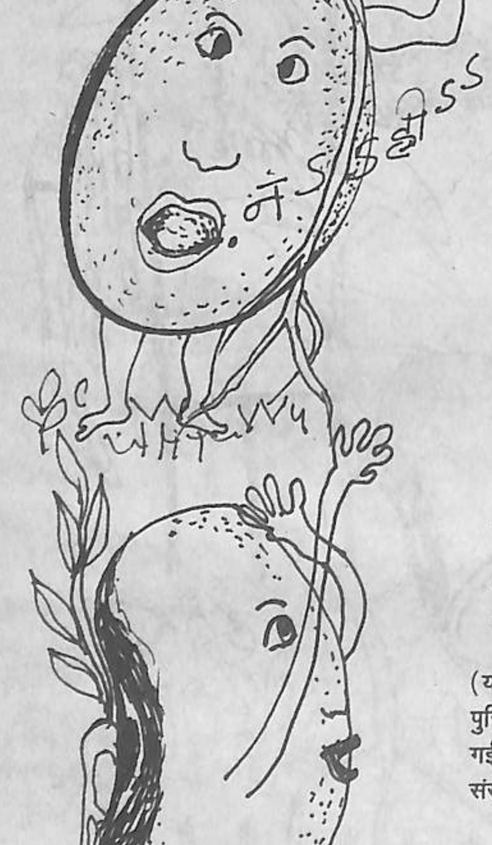

खेत में हमें बोया किसने?
लगी प्यास, तो सींचा किसने?
बढ़ने को खाद देता रहा कौन?
सबकी रखवाली करता रहा कौन?

सुन सवाल सब हो गए चुप
शोर करना सब गए भूल
मूँगफली बोली वाह, मसूर
बात में तेरी दम है भरपूर
मनुष्य पर हम हैं निर्भर
हम पर हैं मनुष्य निर्भर
अगर यह रखेंगे ध्यान
तभी रहेगी दोनों की शान।

(यह रचना बच्चों के लिए बनी एक मराठी पुस्तिका 'जाऊ आरोग्याच्या गावा' से ली गई है। इसे सामाजिक आरोग्य संशोधन संस्था, वरली, मुंबई ने प्रकाशित किया है।)

सभी चित्र : शोभा घारे

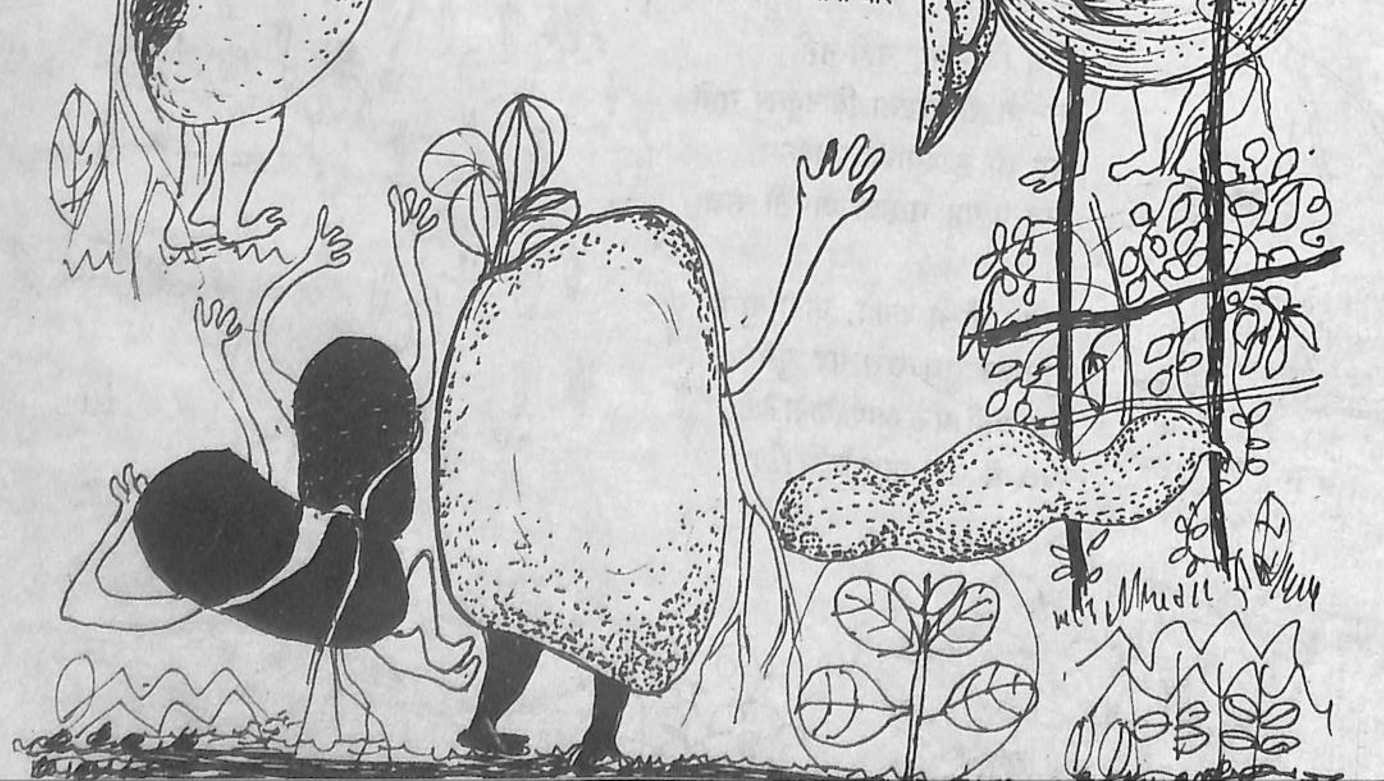

अंकुरित दाने : सोने में सुहागा

'**पूँ**छ वाले दानों की सभा' कविता पढ़कर यह तो तुम समझ ही गए होगे कि ये दाने कौन-से हैं?

साबुत दालें या दाने आमतौर पर हम रोज़ ही खाते हैं। लेकिन अगर इन्हें अंकुरित कर लिया जाए तो खाने के मज़े के साथ-साथ इनकी पौष्टिकता भी बढ़ जाती है।

इन्हें या इनकी क़िस्म के अन्य साबुत दानों को यदि कुछ समय के लिए पानी में भिगोकर फुला दिया जाए तो एक-दो दिन में उनमें अंकुर फूट आते हैं। हाँ, इसके लिए फूले हुए दानों को गीले कपड़े में लपेटकर बर्तन आदि में ढककर रखना पड़ता है। जाड़ों में डेढ़-दो दिन का समय लगता है – अंकुर निकलने में। लेकिन गर्मियों में तो चौबीस घण्टे में ही अंकुर निकल आते हैं।

इतना तो तुमने पढ़ा या सुना ही होगा कि दालों और फलियों के दानों आदि में कई पोषक तत्व होते हैं। पोषक तत्व यानी ऐसी चीज़ें जो हमारे बढ़ते शरीर को बढ़ने में, कई बीमारियों से बचाव में और इसी तरह के कामों में मदद करती हैं। इनमें खासतौर पर कैरोटीन, विटामिन-ई, विटामिन-बी काम्पलेक्स और विटामिन-सी पाए जाते हैं। थोड़ी बहुत मात्रा में इनमें खनिज तत्व भी मौजूद रहते हैं।

लेकिन जब ये दाने अंकुरित होते हैं तो विटामिन-सी की मात्रा और बढ़ जाती है। इसीलिए इन्हें अधिक पौष्टिक और फ़ायदेमन्द माना जाता है।

लगे हाथ एक बात और। आमतौर पर दालों या दानों को पानी में उबालकर पकाया जाता है। उबालने पर विटामिन-सी की अधिकांश मात्रा पानी में निकल आती है। इसलिए उबालने के लिए उतना ही पानी लेना चाहिए, जितना पकाने के लिए ज़रूरी हो ताकि विटामिन-सी वाले पानी को फेंकना न पड़े।

अब ये तो थीं थोड़ी गंभीर बातें। पर हमने तो बात छेड़ी थी कुछ मज़ेदार, ज़ायकेदार, चटपटी बातें करने के लिए, खाने-पीने की बातें। अंकुरित दाने खाने के कई बहुत सरल तरीक़े हैं। एक तो यही कि कच्चे दानों के साथ गुड़ मिलाकर खा लो। बड़ा मज़ा आता है। या फिर थोड़े-से तेल में राई-जीरे का छौंक लगाकर और नमक-मिर्च डालकर इन्हें भून लो। इस तरह के भोजन को कुछ इलाक़ों में ऊसल कहते हैं।

एक और तरीक़ा बड़ा मज़ेदार है। कई अलग-अलग तरह के दानों को अंकुरित कर लो। फिर उसमें प्याज, टमाटर, हरी मिर्च और हरा धनिया बारीक-बारीक काटकर मिला दो। ऊपर से नमक छिड़क दो और थोड़ा नीबू निचोड़ लो। बढ़िया स्वादिष्ट चाट तैयार।

हैं न, बहुत सरल उपाय। और हमें पक्का यकीन है कि तुम्हें इस तरह से अंकुरित दाने खाना खूब पसन्द आएगा। आया या नहीं यह आज़माकर देखो और हमें ख़त लिखकर बताना।

और हाँ, इस बात का ख़्याल रखना कि अंकुर बहुत लम्बे न हो जाएँ। ज़्यादा बड़े हो जाने पर इनमें एक अजीब-सा स्वाद आ जाता है। फिर ऐसे दाने पकाने में भी ज़्यादा समय लगता है। आमतौर पर एकाध सेन्टीमीटर लम्बे अंकुर ही ठीक रहते हैं।

❑

फोटो अनुभव से साभार

माथापच्ची के हल : सितम्बर, 1997

1. दिए गए सभी बड़े गोलों में अन्दर चार छोटे गोले हैं। सभी में चार में से दो गोले भरे हैं और दो ख़ाली हैं। लेकिन उनके ख़ाली या भरे होने का एक क्रम है। जैसे पहला गोला ख़ाली है दूसरा भरा, तीसरा ख़ाली है चौथा भरा। या इसका उल्टा क्रम है। लेकिन एक बड़ा गोला इस गुणधर्म का नहीं है।
2. भतीजी की उम्र है 12 वर्ष और बुआ की 48 वर्ष।
3. त्रिभुज को आठ तरह से रंगा जा सकता है।

6. पाँच त्रिभुज वाली आकृति

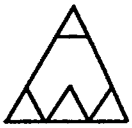

7. हर भुजा तथा कर्ण का जोड़ 15 आएगा।

2	7	6
9	5	1
4	3	8

8. गोले के सात में से छह टुकड़े तीन तरह की रेखाओं के नमूने हैं। प्रत्येक तरह की रेखा से दो टुकड़े बने हैं। एक टुकड़े में रेखा आड़ी है, दूसरे में खड़ी। लेकिन सातवाँ टुकड़ा ऐसा है जिसमें आड़ी और खड़ी रेखाओं से बना नमूना है। यानी वह टुकड़ा दोनों तरह की रेखाओं के गुणधर्म वाला है। चूँकि प्रत्येक तरह की रेखा से बने दो टुकड़े गोले में हैं इसलिए ग़ायब टुकड़ा इस सातवें टुकड़े जैसा होगा।

वर्ग पहेली 73 का हल

म	छा	ज	न	■	श	र	व	त
हु	■	■	जा	■	रा	■	■	र्जु
आ	पा	■	क	पू	र	■	अ	मा
■	नी	य	त	■	त	र	ल	■
ह	ल	■	■	■	■	■	क	म
■	ग	ज	र	■	जा	गृ	त	■
त	ना	■	सा	ध	न	■	रा	शि
लु	■	■	य	■	व	■	■	का
वा	ता	य	न	■	र	ण	भे	री

वर्ग पहेली - 73 के सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक हैं – राजन जाना, कानपुर; राजेन्द्र रावत, पौड़ी (गढ़वाल), उ. प्र.। रणवीर सिंह गिल, दामोलाई, बीकानेर; ताराचन्द, डाबखुर्द, दौसा; कैलाश चन्द्र कीफ, कटसूरा, अजमेर; **सभी राजस्थान**। नेहा सिंगारे, सारणी, बैतूल; योगिता अमोल्या, खण्डवा; तोमेश्वर सोनकर, रुदगाँव; ओ. पी. सोनसारवाँ, कीरगी, राजनांदगाँव; आशीष कुमार साहू, कुरुद, दुर्ग; विमर्श भट्ट, रतलाम; **सभी म. प्र.**। कमलेश मौर्य, कामठी, **महाराष्ट्र**। आभास मुखर्जी, **दिल्ली**। इन्हें चकमक का अक्टूबर का अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

वर्ग पहेली – 76

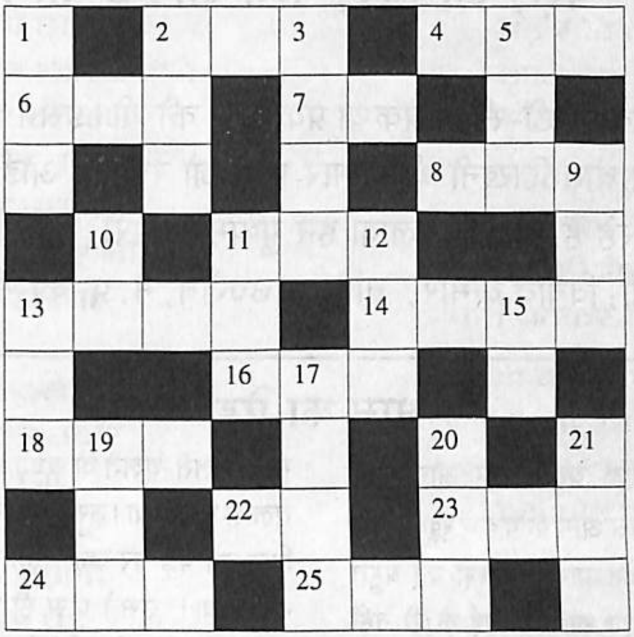

संकेत : बाएँ से दाएँ

2. गांधी जी का अचूक अस्त्र (3)
4. अचार चखा में ढूँढो सूत कातने का लकड़ी का बेना यंत्र (3)
6. फूल (3)
7. एक लम्बा सफ़ेद कंद (2)
8. तह में आधी बात, वह जो बर्बाद हो (3)
11. दरवाज़े तक लीपना में ढूँढो हाथ से सूत कातने का छोटा यंत्र (3)
13. मिलकर काम करने वाले (4)
14. नाप-तौल (4)
16. उलट-पलट नाटक में जोड़ो एक मात्रा तो टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ (3)
18. कपड़ा बेचने वाला (3)
22. तुरन्त (2)
23. पाताल में मात्रा की गड़बड़ी से ग़ायब हो जाओ (3)
24. अगर साथी हो तो रथ पर बैठो (3)
25. बरसात में आने वाला एक अनाज (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. रोक या नियंत्रण (3)
2. आलम की काट-छाँट में पालन करना (3)
3. मूसा कहि गए समूह के बारे में (4)
5. जमीन का क्षेत्रफल (3)
9. किसी और की चीज़ उठा ले जाना (3)
10. गुफा (2)
11. छतरी काली में है क़ायदा (3)
12. असली पना पीकर लेप लगा (3)
13. सूली (3)
15. लामा को पलटो तो गले का हार मिलेगा (2)
17. पुराने ज़माने की ऊँची घोड़ा-गाड़ी (4)
19. जो चीज साफ़ प्रकट हो (3)
20. टकसाल में सिक्कों की ....होती है (3)
21. झण्डा (3)

इस पहेली का मूल रूप हमें भुवनेश्वर प्रसाद राठौर ने नंदौरखुर्द, बिलासपुर से भेजा था।

सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का वह अंक उपहार में भेजा जाएगा जिसमें इस पहेली का हल छपेगा। वर्ग पहेली – 76 का हल जनवरी , 1998 के अंक में देखें।

पेड़, जानवर, पक्षी और इन्सान

जून, 97 अंक में एक छोटी-सी चित्रकथा प्रकाशित की थी। इसमें चार चित्र थे, जिन्हें देखकर तुम्हें अपनी बात लिखनी थी। हमारे पास जो रचनाएँ आईं उनमें से कुछ हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। इनके अलावा हमें पुष्पम कुमारी, बनौली, दरभंगा, बिहार; राजेश चौरे, इटारसी; विनोद कुमार, नांदेड़, उज्जैन, म. प्र. की भी रचनाएँ मिली हैं।

आम का पेड़

एक बार एक जंगल में एक बहुत बड़ा और बहुत ख़ूबसूरत आम का पेड़ था। उस आम के पेड़ में ख़ूब अच्छे मीठे-मीठे आम हुआ करते थे। आम जानवरों को बहुत पसन्द थे। पर पेड़ इतना ऊँचा था कि कोई ले ही नहीं पाता था। एक दिन एक चिड़िया को एक तरक़ीब सूझी। उसने सोचा अगर वह उस पेड़ पर घर बना ले तो वह आराम से आम खा सकती है। और उसने वैसा ही किया।

इस पेड़ के यहाँ होने की बात कुछ ही जानवरों को मालूम थी। वो चिड़िया जब सुबह उठती तो यह गीत गाती–

इस जंगल में एक बड़ा आम का पेड़ है
उस पेड़ पर मीठे आम लगे हैं
आओ बंदर मामा आओ
औरों को भी लेकर आओ
आओ इस पेड़ के मीठे फल खाओ

जानवरों की पलटन हाज़िर हो जाती और चिड़िया उनको आम देती। सारे जानवर पेड़ की छाँव में बैठकर मज़े से आम खाते। चिड़िया रोज़ सबको आम देती और सोचती कि अगले साल फिर वह ऐसा करेगी।

पास ही के गाँव में एक स्वार्थी आदमी था जो जानवरों की भाषा समझ लेता था। उसने यह गाना सुना और चल दिया जंगल की ओर अपनी कुल्हाड़ी, एक तकिया, एक बड़ा-सा बोरा और चादर लेकर। वो जा रहा था उस आम के पेड़ के फल तोड़ने। वो सोच रहा था, कितने सारे फल होंगे उस पेड़ पर। मैं पेड़ के सारे फल तोड़ लूँगा और फिर गाँव में जाकर उनको बेचूँगा। ख़ूब सारा पैसा मिलेगा मुझे। चलते-चलते वो रुका। सामने ही था वो पेड़ जिसकी तलाश में वह था। उसने अपने सामान को नीचे रख दिया। फिर वह पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करने लगा पर चढ़ नहीं पाया। उसने पास ही पड़ी हुई एक डाल उठा ली और ज़ोर-ज़ोर से आमों के ऊपर मारने लगा पर एक भी आम नहीं मिला।

गुस्से में आकर उसने फैसला कर लिया कि वह पेड़ को काट ही देगा। उसने तने पर ज़ोर से कुल्हाड़ी मारना शुरू कर दिया। तना मोटा था इसलिए उसे इस काम को पूरा करने में दो दिन लगे। दो दिन बाद वह बहुत खुश था। समझो उसे ख़ज़ाना मिल गया हो। उसने आम तोड़कर अपने बोरे में भरने शुरू किए पर आम इतने सारे थे कि बोरा भर गया पर आम नहीं ख़त्म हुए।

उसने सोचा कि गाँव जाकर इनको बेच देता हूँ बाद में आकर और ले जाऊँगा। उसने गाँव जाकर आम बेचे। बस अब तो सोना ही सोना था। आम इतने अच्छे थे कि सारा गाँव झूम गया। शंकर की दुकान के आगे लम्बी कतार लग गई। चार-पाँच दिन तक तो शंकर की ख़ूब आमदनी हुई पर उसके बाद उसके पास आम ही नहीं बचे।

शंकर ने सोचा, मैं पेड़ पर और आम छोड़कर आया था अब वक़्त है उनको लाने का। और चल दिया जंगल की ओर, वही अपना पुराना सामान लेकर। पेड़ के पास पहुँचकर उसे पता चला कि सारे आम तो जानवर खा गए और पेड़ पर एक भी आम नहीं बचा।

संचारी बिस्वास, छठवीं, भोपाल, म. प्र.

वृक्ष कथा

जानवरों ने पत्ती खाई
साथ में पेड़ की छाया पाई
कुछ ने तो फल भी खा डाले
मीठे-मीठे और रसवाले
कुछ पक्षी ने पेड़ पर
अपना घोंसला बनाया
इतना कुछ होते हुए भी
पेड़ कुछ न फरमाया

किसी ने देख फल
मीठे-मीठे और रसदार
खाने के लालच में
पत्थर दे मारे दो-चार
फिर भी मौन खड़ा है
सब कुछ सहता पेड़
सबको छाया और फल देता
परहित करता पेड़

पर इन्सान ने उसको
काटा है निर्ममता से
प्राणवायु देता जो हमको
सदा सहजता से
वृक्षारोपण करें चलो हम
संकल्प उठा लें आज
वरना प्रकृति के कुप्रभाव की
गिर जाएगी गाज

चम्पालाल कुशवाहा, हिरणखेड़ा,
होशंगाबाद, म. प्र.

एक पेड़ था एक जंगल में
बड़े मोटे तने का साया
आते-जाते जो भी जीव
उनको मिलती सुगम छाया।

रंग-बिरंगे जन्तु-पशु
आते वहाँ आराम करने
दिनभर की मेहनत के बाद
वहाँ बैठकर विश्राम करने

पक्षी बनाते घोंसले अपने
चूज़ों को उसमें रखते
आराम से वहाँ पर रहते
मीठे-मीठे फल ये चखते

पेड़ और फल उनकी तरह
जो साथ रहकर बिछड़ जाते थे
टप-टप करके गिरते फल
जब वे पूरे पक जाते थे

पर इन्सान को यह न भाया
उसे तो चाहिए थी लकड़ी
वह कुल्हाड़ी मारे दनादन
और फुनगी ने धरती पकड़ी

यह थी कथा एक वृक्ष की
जो मदद करते नहीं थकता
पूरा-पूरा कट जाने पर भी
शिकायत कभी नहीं करता

के रामदास, नौवीं, लोयाबाद,
धनबाद, बिहार

पेड़

ऊँचे-ऊँचे बड़े-बड़े।
हरे भरे थे पेड़ खड़े॥
शीतल थी सुखदायी थी।
छाया मन को भाई थी॥
हाथी शेर कंगारू ने।
चीता वानर भालू ने॥
वन में समय बिताया था।
सुख पेड़ों से पाया था॥
कोयल मैना रानी ने।
गौरैया की नानी ने॥
पेड़ों पर ही वास किया।
कभी न उनका नाश किया॥
लाल हरे पीले काले।
खट्टे मीठे रस वाले॥
मिलते रहे पौष्टिक फल।
हर मौसम में बदल-बदल॥
कौन कुल्हाड़ी लाया है।
वन का किया सफ़ाया है॥
शायद वह इन्सान है।
या फिर वो हैवान है॥

✎ हुकुमचन्द विश्वकर्मा, पड़रिया राजाधार, रायसेन, म.प्र.

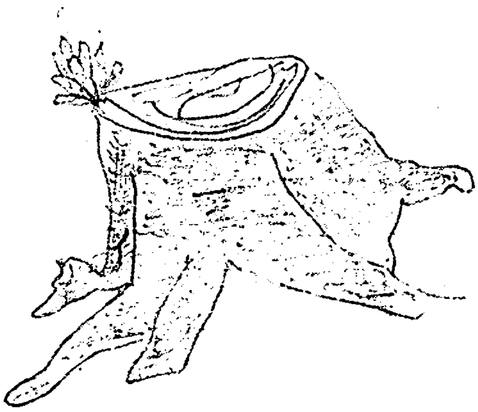

✎ अनुरुचि पांडे, नौवीं, अल्मोड़ा, उ.प्र.

पेड़ की कथा

बहुत वर्ष बीते एक पेड़ था। उसके नीचे घास का बसेरा था व ऊपर चिड़ियों व अन्य पक्षियों का बसेरा था। वहाँ पर गाय घास चरती थीं। वह पेड़ आम का था। सब पेड़ को प्यार से आम-दादा कहते थे। वहाँ एक चिड़िया रहती थी। उसका घोंसला आम-दादा की डाल के खोखल में था। तभी वसंत ऋतु की फुहार आयी और आम-दादा की डालों में आम भर गए। जब आम पककर गिरने लगे तो पक्षियों की मौज हो गई। फिर पतझड़ जब आया तब सब पत्ते सूख गए। आम-दादा ठूँठ बन गए। तब एक आदमी आया व कुल्हाड़ी से आम-दादा को काटकर ले गया। पेड़ बेचारा रोता रह गया।

✎ मनु पांडे, आठवीं, अल्मोड़ा, उ.प्र.

पेड़, पशु ,पक्षी और मानव

बात बहुत वर्षों पुरानी है, जब घने जंगल हुआ करते थे। एक गाँव में एक घना जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर व पक्षी रहते थे। गाँव के पास एक नदी बहा करती थी। उस गाँव के लोग उस घने जंगल में जाने से डरते थे। क्योंकि उस जंगल में घना अंधेरा रहता था। सूर्य की किरणें भी वहाँ नहीं पहुँचती थीं। परन्तु वन के किनारे जो फलों के पेड़ लगे थे उनसे वे लोग हर मौसम में फल प्राप्त करते थे। और अपना जीवन सुखपूर्वक बिताते थे।

उस वन के अन्दर पशु-पक्षी भी बड़े आराम से वहाँ रहते थे। वन के कई प्रकार के पंक्षी जब गाँव के ऊपर से कलरव करते उड़ते तो गाँव के लोगों को आनंद आता था। वहाँ वन होने के कारण कभी अकाल नहीं पड़ता था। वहाँ का पर्यावरण हमेशा साफ़ रहता था। परन्तु जब गाँव की आबादी बढ़ी तो लोगों ने पेड़ों को काटकर अपने घर बना लिए व लकड़ी बेचकर पैसे कमाने लगे। इस धन्धे में लाभ अधिक होने के कारण वन जल्दी-जल्दी कटने लगे। और एक समय ऐसा आया कि जहाँ वन था वहाँ एक बहुत बड़ा मैदान नज़र आने लगा। कहीं भी एक भी पेड़ नजर नहीं आता। और आकाश में धुएँ के बादल व नदी में कारखानों का गंदा पानी बहने लगा।

✎ देवेन्द्र कुमार कोठारी, आगर मालवा, शाजापुर, म.प्र.

चंदा की शरारत

चकमक में बच्चों के लिए छपने वाली किताबों की चर्चा भी हो, इस उद्देश्य से कुछ साल पहले एक स्तम्भ शुरू किया था। लेकिन विभिन्न कारणों से यह नियमित नहीं हो पाया। एक कारण यह भी था कि ऐसी किताबें जिनकी चर्चा सचमुच में की जाए, कम ही मिल पाती हैं। बहरहाल इस अंक में इसकी पुनः शुरुआत कर रहे हैं। हमारी कोशिश होगी कि यह चकमक का नियमित स्तम्भ बन पाए।

इस बार जिस किताब की चर्चा कर रहे हैं, वह है – **चंदा की शरारत**। यह छह छोटी कहानियों तथा नौ कविताओं का मिला-जुला संग्रह है। पहली नज़र में ही यह संग्रह अपनी ओर पाठक का ध्यान खींचता है।

इस संग्रह की सबसे अच्छी बात यह है कि रचनाओं के साथ के चित्र तथा किताब का आवरण दो बच्चों ने बनाया है। ये बच्चे हैं - पारुल तथा किसन। हालाँकि कविताएँ तथा कहानियाँ साधारण ही हैं, पर नोट करने वाली बात यह है कि उन्हें जान-बूझकर शिक्षाप्रद बनाने की कोशिश नहीं की गई है। अगर ऐसी कुछ बातें हैं भी तो वे स्वाभाविक रूप से आ गई हैं। 'चंदा की शरारत' शीर्षक कहानी, संग्रह के प्रकाशित होने से पहले चकमक के एक अंक में छप चुकी है।

किताब : चंदा की शरारत — **लेखिका : मालती बसंत**
चित्र : पारुल और किसन — **मूल्य : पन्द्रह रुपए** — **पृष्ठ : बत्तीस**
प्रकाशक/वितरक : भावना प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., ग्वालियर रोड, झाँसी

छपाई साफ़-सुथरी है तथा बड़े टाइप का उपयोग किया गया है। हालाँकि संग्रह में शब्दों की अशुद्धियाँ हैं तथा छपाई की कुछ खामियाँ भी। उम्मीद कर सकते हैं कि संग्रह के अगले संस्करण में ये नहीं होंगी।

❑ **राजेश उत्साही**

इस स्तम्भ में हम ऐसी किताबों की चर्चा करना चाहेंगे, जिन्हें बच्चों को ध्यान में रखकर लिखा और छापा गया है। जिनमें परम्परा से हटकर कुछ नए प्रयोग किए गए हैं। जिनमें बच्चों की दुनिया, उनकी दृष्टि झलकती हो। लेखकों/प्रकाशकों तथा पाठकों से अनुरोध है कि वे ऐसी किताबें का परिचय या किताबें हमें भेजें।

❑ *चकमक*

एकलव्य के स्टॉल पर आओ, नई किताबें पाओ

1. भोपाल पुस्तक मेला, भोपाल में 14 से 20 नवम्बर, 1997
2. राँची पुस्तक मेला, राँची में 28 नवम्बर से 10 दिसम्बर, 1997
3. विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली में 7 से 14 फ़रवरी, 1998

लूपर हवाई जहाज़

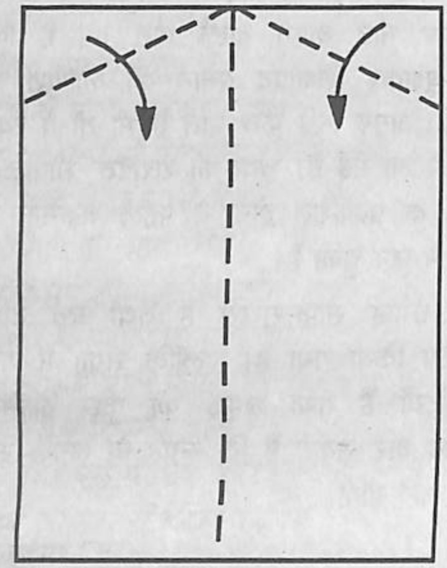

1. एक 11 इंच लम्बा और 8.5 इंच चौड़ा कागज़ लो। चित्र में दिखाई बीच वाली रेखा से कागज़ को मोड़कर खोल लो। फिर दोनों छोटी टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ो। ध्यान रखना कि दोनों तरफ के मुड़े हुए सिरे बराबर ही हों। कहीं एक लम्बा और एक छोटा न हो जाए। इस आकृति को पलट लो।

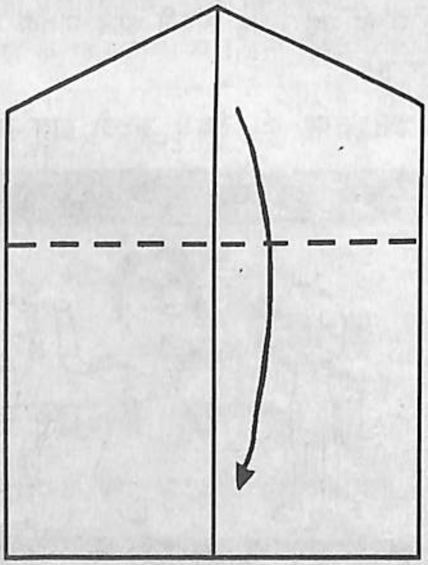

2. इस चित्र में बनी टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाकर खोल लो। इस आकृति को एक बार फिर पलट लो ।

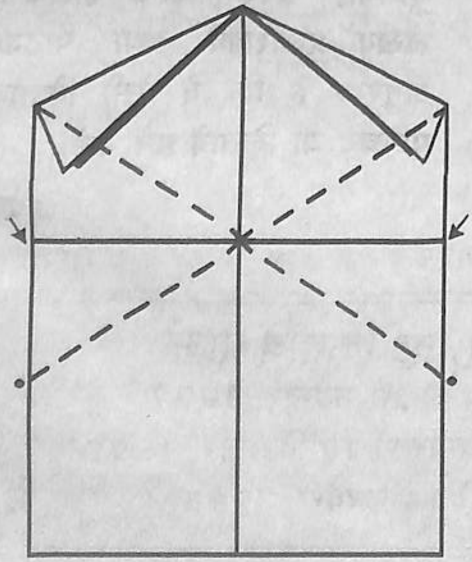

3. अब इस चित्र में जो टूटी रेखाएँ हैं उन पर मोड़ बना कर खोल लो। फिर बिन्दुवाले किनारों से क्रॉस के बीच तक का मोड़ बनाना है। इस तरह कि तीर वाले किनारे भी बीच में मुड़कर दब जाएँ।

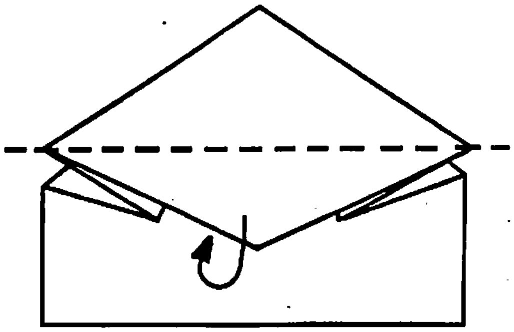

4. थोड़ा मुश्किल काम था पर ध्यान से करोगे तो ऐसी आकृति बनेगी। इसमें बनी टूटी रेखा पर से तुम्हारी तरफ निकले नुकीले छोर (केवल ऊपरी परत)को अन्दर की ओर मोड़कर दबा दो।

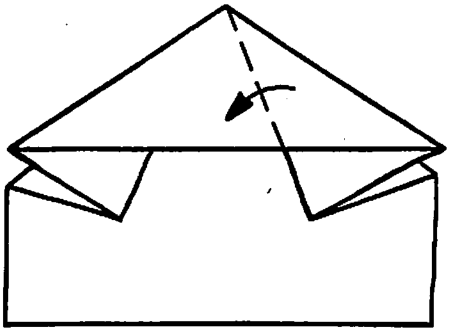

5. इस तरह की आकृति बनेगी। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से ऊपरी परत को तीर की दिशा में मोड़ो।

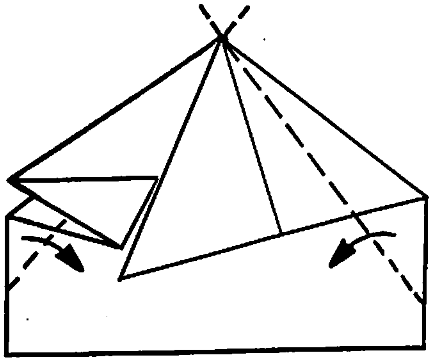

6. ऐसी आकृति मिली, अब टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो। जिस ऊपरी परत को खोलकर बाईं ओर लाए थे उसे वापस मोड़ दो। चित्र 5 और 6 की क्रिया आकृति के बाईं ओर भी करना है।

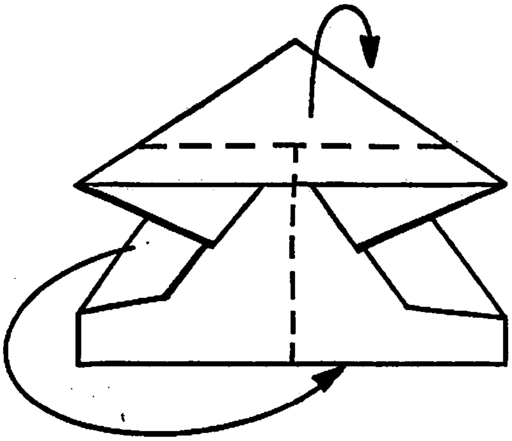

7. इस चित्र में बनी टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाने के लिए पहले ऊपरी नोक को पीछे मोड़ लो। फिर पूरी आकृति को बीच से पीछे की ओर मोड़ लो। और आकृति को लिटा दो।

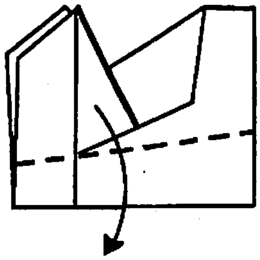

8. अब इस चित्र में बनी टूटी रेखा पर से जहाज़ के पंख को मोड़ लो। दूसरी ओर भी ऐसा ही मोड़ बनाओ।

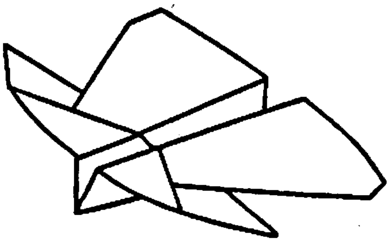

9. बस जहाज़ तैयार है। इसे बहुत ज़ोरदार धक्के से उड़ाने पर यह सुन्दर तरीके से लम्बी उड़ान भरकर ज़मीन पर उतरता है।

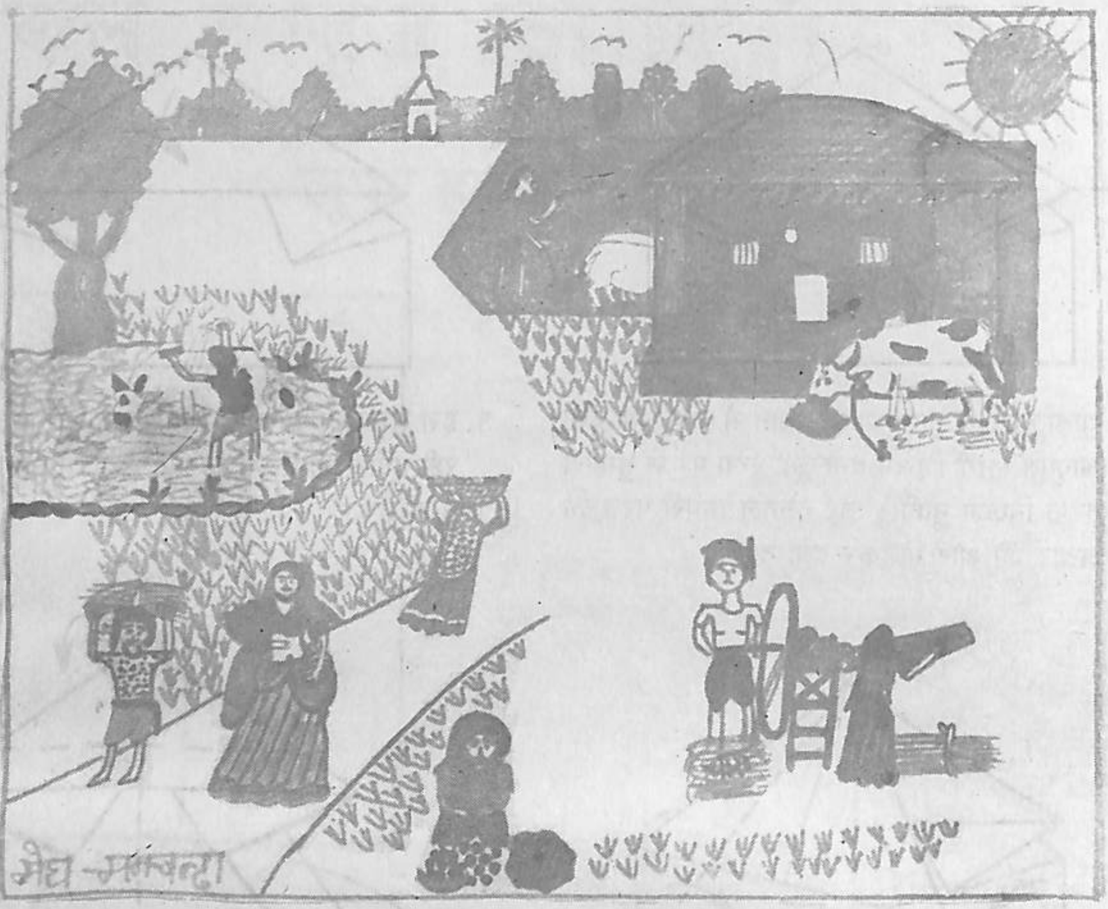

मेघ मनचन्दा, चौथी, पीपली कुरुक्षेत्र, हरियाणा

हुआ सबेरा

निकला सूरज हुआ सबेरा
हुई रोशनी मिटा अंधेरा
उठ गए हैं अब पक्षी सारे
खिले कमल हैं प्यारे-प्यारे
उठो तोड़ो आलस का घेरा
निकला सूरज हुआ सबेरा
हुई रोशनी मिटा अंधेरा

किसान चल पड़े लेकर हल
धो वो मुँह चलाकर नल
मज़दूरी के लिए निकल पड़े
क्या व्यापारी क्या ठठेरा
निकला सूरज हुआ सबेरा
हुई रोशनी मिटा अंधेरा

गुरमीत सिंह सिक्ख, गढ़ी बारोद, शिवपुरी, म.प्र.

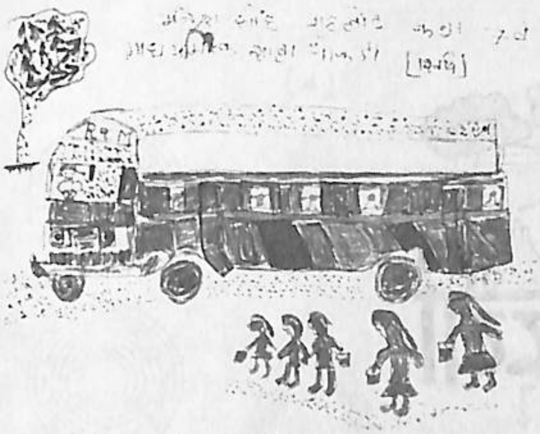

मुकेश सिंह गहलोत, सातवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

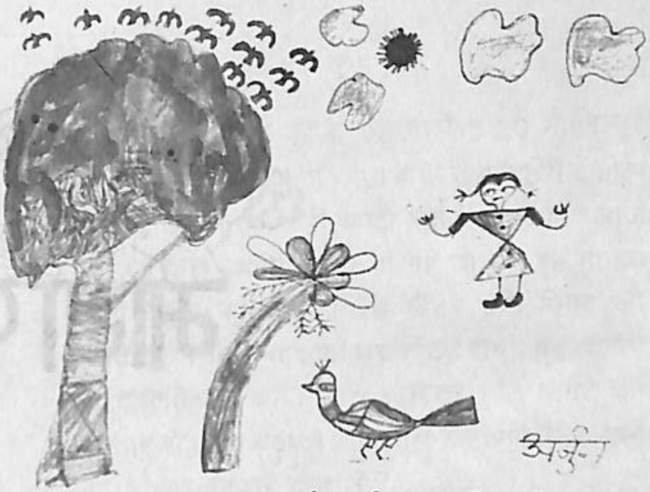

अर्जुन, कुम्हरी, दमोह, म. प्र.

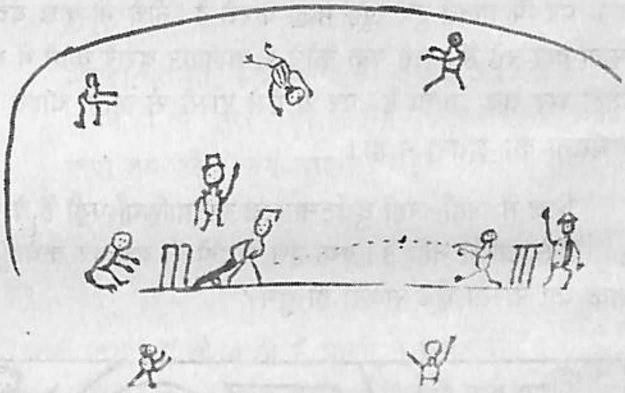

रामकृष्ण भिलाले, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

पालेश्वर सिंह ठाकुर, दसवीं, पिथौरा, रायपुर, म. प्र.

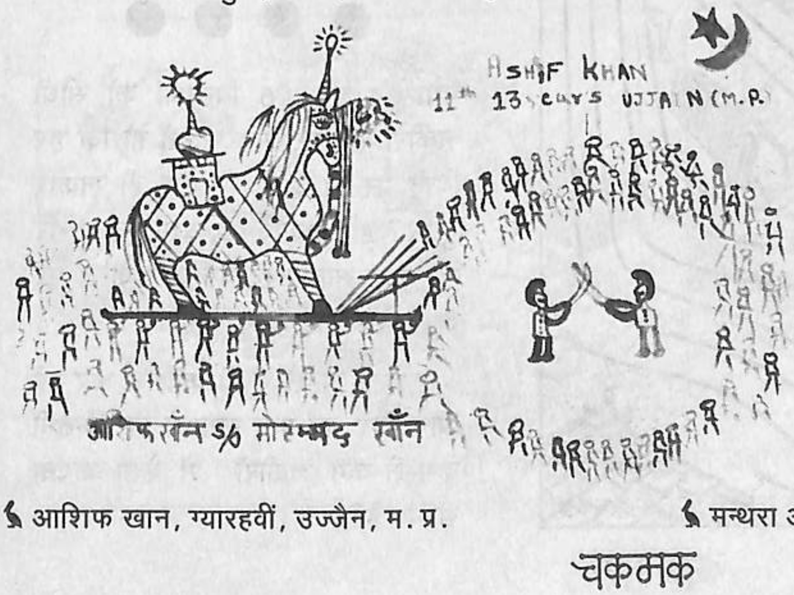

आशिफ खान, ग्यारहवीं, उज्जैन, म. प्र.

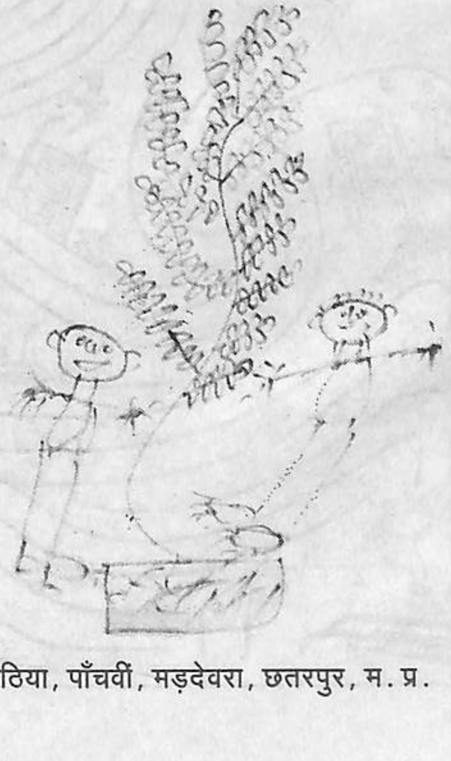

मन्थरा आठिया, पाँचवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

माथापच्ची

(1)

ठण्डे इलाक़ों में जब जाड़ों में बर्फ़ गिरती है तो बच्चे बर्फ़गाड़ी में बैठकर बर्फ़ पर फिसलते हुए ख़ूब मज़ा करते हैं। नीचे भी कुछ बच्चे ऐसे ही मज़ा कर रहे हैं। इन्हें एक कोने से चलकर दूसरे कोने में बने कवेलू वाले घर तक जाना है। पर ये ऐसे रास्ते से जाना चाहते हैं जिसमें दुर्घटना का ख़तरा न हो।

चित्र में जहाँ-जहाँ दुर्घटनाग्रस्त बर्फ़गाड़ियाँ पड़ी हैं वे सब जगह ख़तरे से ख़ाली नहीं हैं। क्या इन जगहों से बचकर कवेलू वाले घर तक का रास्ता ढूँढ सकते हो तुम?

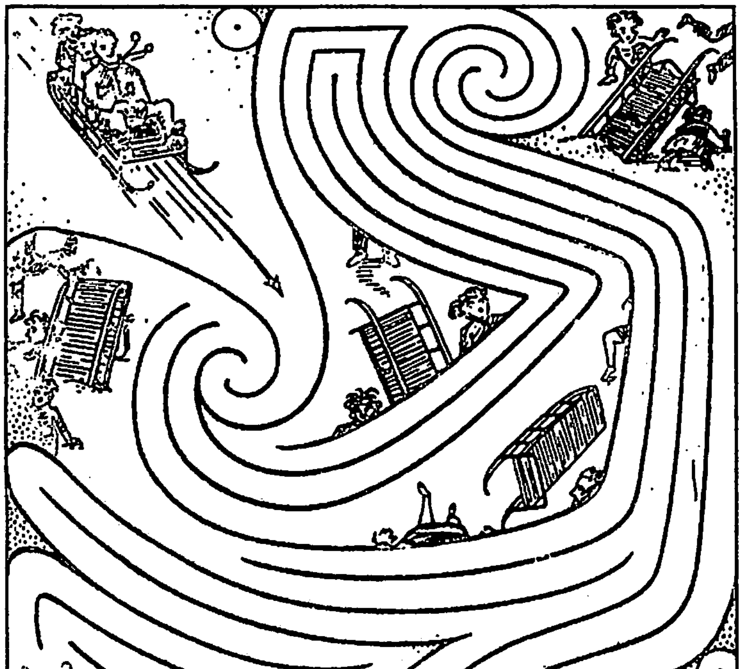

(2)

316

शांति के घर के दरवाज़े पर यह मकान नम्बर लिखा है। शांति एक दिन बैठे-बैठे यह सोचने लगी कि इन तीन अंकों को अलट-पलटकर तीन अंक वाली कितनी संख्याएँ बनाई जा सकती हैं। तुम भी सोचकर बताओ।

(3)

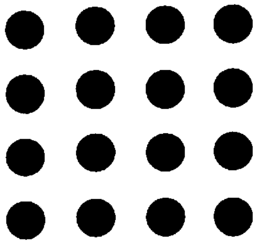

क्या तुम इन 16 बिन्दुओं को सीधी लकीरों से ऐसे जोड़ सकते हो कि हर बिन्दु पर से कोई भी एक ही लकीर गुज़रे? हाँ, लकीरें अलबत्ता एक-दूसरे को काट सकती हैं, पर ऐसी जगह पर जहाँ नीचे कोई बिन्दु न हो।

चलो, पहले यूँ ही कोशिश कर लो और फिर यह पता लगाओ कि कितनी कम-से-कम लकीरों में ऐसा करना सम्भव है?

(4)

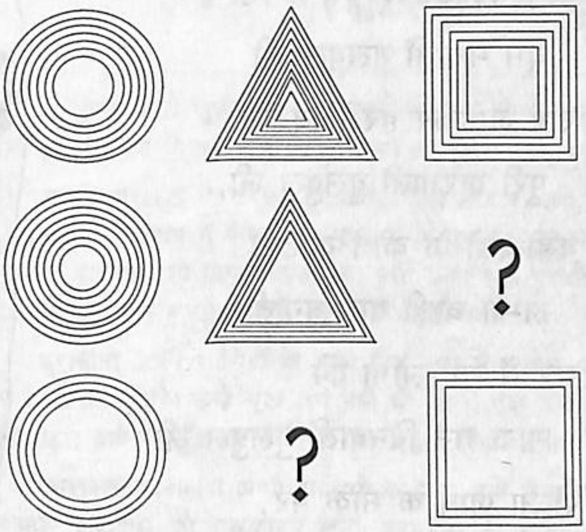

ये सभी आकृतियाँ एक निश्चित क्रम में बनी हैं। पहले इस क्रम का पता लगाओ और फिर यह भी कि क्रमानुसार प्रश्न चिन्ह (?) वाली जगहों पर कैसी आकृतियाँ आएँगी?

(5)

हीरालाल का घर उसके स्कूल से 300 मीटर दूर है। सुबह जब वह स्कूल जाता है तो ख़ूब जल्दी में होता है, इस डर से कि कहीं घण्टी बज न चुकी हो। आज तो उसे कुछ ज़्यादा ही देर हो गई थी। तो वह भागता हुआ स्कूल पहुँचा – 100 मीटर प्रति मिनट की रफ्तार से। पर दोपहर को घर लौटते समय वह आराम से टहलते हुए आया – 25 मीटर प्रति मिनट की रफ़्तार से। अब बताओ हीरालाल की आने और जाने की औसत रफ़्तार क्या थी?

(6)

अच्छा बताओ, ऐसी कौन-सी संख्या है जिसे हज़ार से जोड़ो तो उत्तर बड़ा आएगा पर हजार से गुणा करो तब उत्तर कम आएगा? बहुत आसान सवाल है। सोचकर तो देखो।

(7)

मुझे राखी के दिन मेरे भाई ने 5 रुपए का एक सिक्का दिया। मैं तो खुशी से फूली न समाई। पाँच रुपए का सिक्का मैंने पहली बार जो देखा था। दिन भर उसे हाथ में लिये-लिये ही फिरती रही। इस बीच उसे मैंने उछाला। पहली बार चित आया। दूसरी बार, फिर चित। तीसरी बार भी, चौथी, पाँचवीं, और छठी बार भी चित ही आया। पर सातवीं बार सिक्के को उछालने से पहले मैं सोच में पड़ गई कि फिर चित आएगा या पट? तुम्हें क्या लगता है? किस बात की सम्भावना ज़्यादा है? सातवीं बार चित या पट?

(8)

ऊपर के दोनों चित्र यूँ तो एक दूसरे की नकल हैं। पर नकल उतारने में उनमें कुछ फ़र्क भी रह गए हैं। कम से कम पाँच अन्तर तो तुम्हें ढूँढ ही लेना चाहिए। पाँच मिल जाएँ तो और ढूँढ निकालो।

बुलबुल जी

दिन भर उछल कूद करती हैं
धूम मचातीं बुलबुल जी
रौब जमाकर हर ज़िद को,
पूरी करवातीं बुलबुल जी,
बड़ों-बड़ों के कान काटतीं
लम्बी चौड़ी बात बनाती
घर में सब लोगों को
नाक चने बिनवातीं बुलबुल जी
शाला जाने के मौके पर,
जहाँ कहीं छुप जाती हैं
भारी बस्ता देख मचलकर
शोर मचातीं बुलबुल जी
ज़रा-ज़रा सी बातों पर
गुब्बारे गाल बना लेतीं,
बड़ी-बड़ी आँखों से भैया,
हमें डरातीं बुलबुल जी
किसी तरह फुसलाते हैं तो
उल्टा हमको बहलातीं
अगर मना लें, तो मुसकाकर
हमें रिझातीं बुलबुल जीं।

❑ गिरिजा कुलश्रेष्ठ

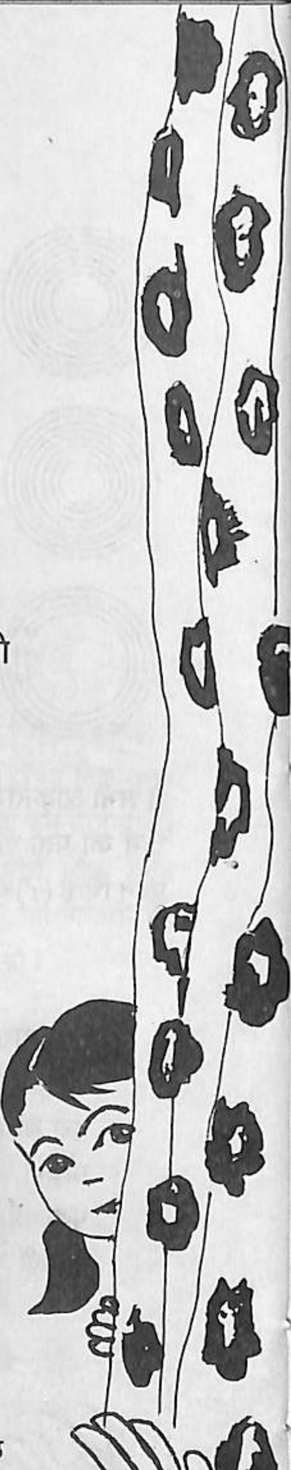

क़िस्सा - बुरातीनो का

अब तक तुमने पढ़ा। जूज़ेप नाम के बढ़ई को एक बोलने वाला लकड़ी का कुन्दा मिला। जूज़ेप ने वह कुन्दा अपने दोस्त कार्लो को भेंट कर दिया। कार्लो ने कुन्दे को तराशकर कठपुतला बनाया। उसका नाम रखा – बुरातीनो।

अपनी शरारतों के कारण बुरातीनो बिल्ले और लोमड़ी के चंगुल में फँस गया। फिर पुलिस के कुत्ते बुरातीनो को नगर के बाहर गन्दे तालाब में फेंक आए। तालाब के कूबर कछुए ने उसे बचाया और उसे सोने की चाबी दी। सोने की यह चाबी काराबास बाराबास भी पाना चाहता था। इसी चक्कर में बुरातीनो और काराबास बाराबास के बीच घमासान लड़ाई हुई। इस लड़ाई में काराबास बाराबास बुरी तरह घायल हो गया।

बुरातीनो अपने साथियों के साथ एक गुफा में जाकर आराम करने लगा। थोड़ी देर बाद वहाँ से काराबास बाराबास और जोंकमार गुज़रे। उन्हें भूख लग रही थी सो वे एक ढाबे की तरफ जा रहे थे। बुरातीनो भी उनके पीछे चल दिया। वह उनसे पहले ढाबे में पहुँचकर पानी के एक घड़े में छिपकर बैठ गया।

काराबास बाराबास अपने साथियों के साथ ढाबे में पहुँचा और डींग हाँकने लगा। थोड़ी देर बाद बुरातीनो घड़े में से काराबास बाराबास को ललकारने लगा। बुरातीनो की आवाज़ सुनकर तीनों घबरा उठे। तभी वहाँ लोमड़ी और बिल्ला आ पहुँचे। उन्होंने बताया कि बुरातीनो घड़े में छिपा है। काराबास बाराबास ने घड़ा उठाकर फ़र्श पर पटक दिया।

घड़े के फूटते ही बुरातीनो मुर्गे की मदद से वहाँ से भाग निकला। काराबास बाराबास अपने साथियों के साथ फिर बुरातीनो को खोजने निकल पड़ा। अब आगे पढ़ो .....

बुरातीनो पापा कार्लो से मिला

सनकी मुर्गा बिलकुल थक चुका था, वह चोंच बाये मुश्किल से दौड़ पा रहा था। अन्त में बुरातीनो ने उसकी दुम छोड़ दी।

और अब वह राजहंसों वाली झील की ओर अकेला ही चल पड़ा। चारों तरफ टूटी हुई टहनियाँ बिखरी पड़ी थीं। घास किसी बग्घी के पहियों से कुचली हुई थी।

बुरातीनो का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। वह पेड़ की उलझी हुई जड़ों में झाँकने लगा।

गुफा ख़ाली थी! ! !

वहाँ न मलवीना थी, न पियेरो, न आर्तेमोन। उसने सोचा दोस्तों का किसी ने अपहरण कर लिया है। या उनकी मौत हो चुकी है! बुरातीनो मारे दुख के औंधे मुँह गिर पड़ा। उसकी लम्बी नाक ज़मीन में धँस गई।

अब उसे समझ में आया कि मित्र उसे कितने प्यारे थे। बुरातीनो फिर से उन्हें पाने के लिए, बस एक झलक देखने भर के लिए सोने की चाबी तक किसी को दे सकता था।

उसके सिर के पास धीरे से भुरभुरी मिट्टी का गुबार-सा उठा और उसके नीचे से मखमली छछूंदर निकल आया। उसने तीन बार छींका और फिर बोला, "मैं तो अन्धा हूँ, लेकिन सुनता बहुत अच्छी तरह हूँ। यहाँ मेढ़ों से जुती एक बग्घी आई थी। उसमें मूरखनगरी का गवर्नर लोमड़ और उसके अंगरक्षक जासूस बैठे हुए थे। वे सभी गुफा में घुस पड़े, वहाँ ख़ूब हाथापाई हुई। तुम्हारे मित्रों को सामान समेत बाँधकर बग्घी पर लादा और चले गए।"

बुरातीनो फुर्ती से उठा और पहिये के निशानों को टोहता हुआ दौड़ने लगा। झील का आधा चक्कर लगाकर वह घनी घासवाले मैदान में पहुँचा।

वह चलता रहा, चलता रहा....... दिमाग़ में कोई योजना नहीं थी। बस, मित्रों को बचाना था। वह खड़ी चट्टान के करीब आया। नीचे उसने गन्दा तालाब देखा, जिसमें बूढ़ा कछुआ रहता था। तालाब की ओर जाने वाले रास्ते पर ही बग्घी जा रही थी, उसे दो मरियल मेढ़े खींच रहे थे। वे हड्डियों का ढाँचा मात्र थे।

बग्घी को एक मुस्टंडा बिल्ला हाँक रहा था। उसके ठीक पीछे गवर्नर लोमड़ महाराज विराजमान

थे।.... गठरियों पर मलवीना, पियेरो और ज़ख्मी आर्तेमोन बंधे पड़े थे। बग्घी के पीछे-पीछे दो अंगरक्षक जासूस डोबरमैन-पिंचर चल रहे थे।

अचानक जासूसों ने अपने थोबड़े ऊपर उठाए। उन्हें खड़ी चट्टान पर बुरातीनो की सफेद टोपी दिख गई।

दोनों कुत्ते लम्बी छलाँगें लगाते हुए चट्टान पर चढ़ने लगे। लेकिन जब तक वे ऊपर पहुँचते, इसके पहले ही बुरातीनो ने सिर के ऊपर हाथ बाँधकर हरी काई से ढँके गन्दे तालाब में छलाँग लगा दी। उसके सामने कोई दूसरा चारा न था।

वह हवा में तिरछा उड़ता हुआ तालाब में बूढ़े कछुए कूबर की शरण में पहुँच गया होता, लेकिन तेज़ हवा का रुख दूसरी दिशा की ओर था।

तेज़ हवा ने लकड़ी के हल्के-फुल्के बुरातीनो को अपनी चपेट में ले लिया और उसे नचाते हुए बग्घी पर बैठे गवर्नर लोमड़ के सिर पर ला पटका।

मुस्टंडा बिल्ला इस आकस्मिक घटना से घबराकर बग्घी से गिर पड़ा और चूँकि वह कायर था, इसलिए उसने बेहोश होने का ढोंग रच लिया।

गवर्नर लोमड़ भी बहुत डरपोक था, इसलिए किकियाता हुआ ढलान पर चढ़ने लगा, रास्ते में बिज्जू की माँद दिखी, बस उसी में घुस गया। वहाँ भी उसे चैन नहीं पड़ा बिज्जू ऐसे मेहमानों को सज़ा देने से बाज़ नहीं आते।

बग्घी से जुते मेढ़े भाग खड़े हुए, बग्घी उलट गई। मलवीना, पियेरो और आर्तेमोन गठरियों समेत लुढ़कते-पुढ़कते बर्डाक की घनी झाड़ियों में पहुँच गए।

यह सब इतनी जल्दी हुआ था कि मेरे नन्हे-मुन्ने प्रिय पाठकों, तुम इतने कम समय में अपने हाथ की उंगलियाँ भी न गिन पाए होते।

दोनों जासूस कुत्ते लम्बी छलाँगें लगाते हुए नीचे उतरने लगे। उलटी हुई बग्घी के पास आकर उन्होंने देखा कि मोटा बिल्ला बेहोश पड़ा है। बर्डाक की झाड़ियों में उन्होंने लकड़ी के नन्हे इन्सानों और पट्टियों से बंधे कुत्ते आर्तेमोन को भी देखा।

पर गवर्नर लोमड़ कहीं नदारद था।

वह जैसे धरती में समा गया हो। अंगरक्षकों को जिसकी हिफाज़त करनी चाहिए थी, वही ग़ायब हो गया।

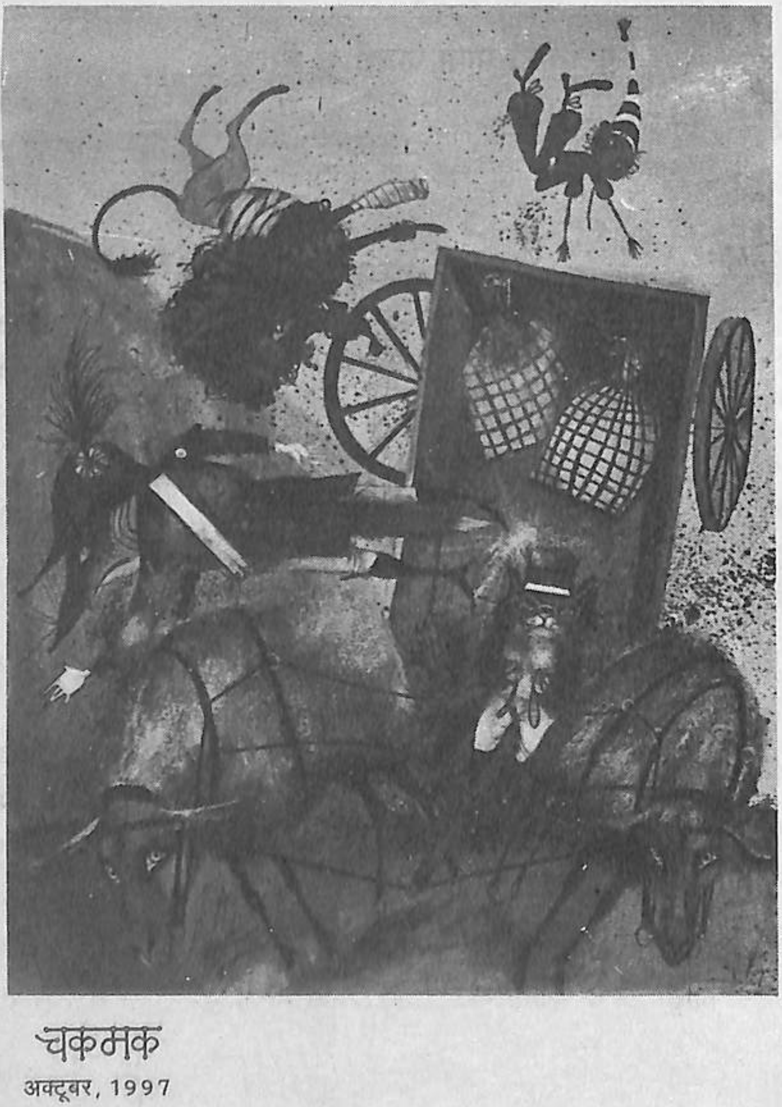

वे लपककर गवर्नर की खोज में जुट गए। उन्होंने उस पथरीली ढलान का चप्पा-चप्पा छान मारा और फिर वे ज़ोर से बिलख पड़े क्योंकि अब उन्हें कोड़े और जेल के सींखचे दिखलाई पड़ने लगे।

निराश होकर वे दुम हिलाते हुए मूरखनगरी की ओर भागे - पुलिस थाने पर झूठी रिपोर्ट लिखाने।

बुरातीनो ने अपना दुबला-पतला शरीर टटोलकर देखा - हाथ-पैर सही सलामत थे। वह रेंगता हुआ बर्डाक की झाड़ियों में गया और उसने मलवीना तथा पियेरो की रस्सियाँ खोलकर उन्हें आज़ाद कर दिया।

पियेरो की आस्तीनें ग़ायब थीं।

"मैंने जमकर मुकाबला किया था," उसने भारी आवाज़ में कहा। "यदि मुझे लंगड़ी नहीं मारी होती, तो मुझे कभी भी पकड़ नहीं सकते थे।"

मलवीना ने उसकी बात का समर्थन किया, "हाँ, यह बिलकुल शेर की तरह लड़ा था।"

उसने पियेरो को गले लगाकर उसके दोनों गालों को चूम लिया।

"बहुत हो गया, ख़त्म भी करो यह चूमना-चाटना," बुरातीनो बड़बड़ाया। "अब यहाँ से तुरन्त भागना चाहिए। आर्तेमोन को दुम घसीटते हुए ले जाएँगे।"

तीनों ने मिलकर बेचारे कुत्ते की दुम पकड़ ली और चढ़ाई पर ऊपर की ओर खींचने लगे।

लेकिन वे अभी आधी ऊँचाई ही तय कर पाए थे कि ऊपर काराबास बाराबास और जोंकमार नज़र आए। लोमड़ी अलीसा उनकी ओर पंजों से इशारे कर रही थी और बिल्ला बज़ीलिओ मूँछ फुलाए गुस्से से फुफकारे जा रहा था।

"हा-हा-हा, क्या ख़ूब रही!" काराबास बाराबास ने ठहाका लगाया, "सोने की चाबी खुद चली आ रही है!"

बुरातीनो पलक झपकते ही यह सोचने लगा कि अब इस नई मुसीबत से कैसे पीछा छुड़ाया जाए।

जोंकमार ढलान पर खड़ा ही-ही कर रहा था।

थुलथुल शरीरवाले काराबास बाराबास को नीचे उतरने में आलस लग रहा था, इसलिए वह भगोड़ों को पुचकारता और मोटी उंगली से इशारा करता हुआ ऊपर बुला रहा था, "आओ, इधर आ जाओ, मेरे नटखट बच्चो....."

"सब अपनी जगह पर खड़े रहो!" बुरातीनो ने हुक्म दिया। "जान भी देंगे, तो हँसते-हँसते! पियेरो, तुम अपनी सबसे घिनौनी कविता सुनाओ और तुम, मलवीना, ठहाका मारकर हँसती जाओ..।"

मलवीना अपनी कमियों के बावजूद एक अच्छी दोस्त थी। उसने झटपट आँसू पोंछ डाले और ज़ोर ज़ोर से ठहाके लगाने लगी,

ऐसे कि ऊपर खड़े लोग चिढ़ जाएँ।

पियेरो कविता बना-बनाकर भद्दी-सी आवाज़ में गाकर सुनाने लगा।

"लोमड़ी अलीसा का देखो बुरा हाल,
पीठ पर बजते डण्डों का कमाल!
भिखमंगा बज़ीलिओ वाहियात भुक्खड़,
चोर ज़माने का बीन रहा टुक्कड़!
जोंकमार दुर-दुर तू दूर भाग,
लात और घूँसे फूटे तेरे भाग।
काराबास बाराबास पहलवानी करता,
बुरातीनो उससे अब नहीं डरता!"

बुरातीनो तरह-तरह का मुँह बनाकर उन्हें चिढ़ाता जा रहा था।

लोमड़ी अलीसा ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा, "हुक्म दें, तो मैं इन बेशर्मों की गरदनें मरोड़ दूँ!"

बस, एक मिनट में सारा खेल ख़त्म हो जाता कि..... तभी ढेर सारी अबाबीलों का झुण्ड सायं सायं करता हुआ मंडराने लगा, "यहाँ, यहाँ, यहाँ!"

काराबास बाराबास के ठीक सिर पर उड़ता हुआ एक कौवा अपनी कर्कश आवाज़ में बोल उठा, "जल्दी, जल्दी, जल्दी!"

ढलान के ऊपर बूढ़ा पापा कार्लो नज़र आया। उसकी आस्तीनें चढ़ी थीं, भौंहें तनी थीं और हाथ में एक मोटा–सा सोटा था।

पापा कार्लो ने कन्धे से काराबास बाराबास को एक ओर धकेला, कोहनी से जोंकमार को दूसरी ओर, सोटे से लोमड़ी अलीसा की पीठ बजा दी और एक ठोकर मारकर बिल्ले की भी ख़बर ले ली...।

इसके बाद उसने झुककर नीचे की ओर देखा, जहाँ लकड़ी के नन्हे-मुन्ने खड़े थे। वह खुशी से भरकर चहक उठा। फिर बोला, "मेरे बेटे, बुरातीनो, शैतान कहीं का, तू जीता-जागता मिल ही गया। आ, मेरे पास आ, जल्दी से!"

(अगले अंक में जारी)

('सोने की चाबी - क़िस्सा बुरातीनो का' से साभार। लेखक : अलेक्सई तोलस्तोय। सभी चित्र : अलेक्सान्द्र कोश्किन।)

वैशाली वाघ, छठवीं, उज्जैन, म.प्र.

वरूण दुबे, जयपुर, राजस्थान

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/97

हर्ष दुबे, पहली, उदयपुर, राजस्थान

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना